अमावस्यामे दीप सन स्त्री

(मैथिली कविता-संग्रह)

कामिनी

नवारम्भ
मधुबनी/पटना

ऑनलाइन बुक स्टोर **www.navarambh.com** पर पुस्तक उपलब्ध।

ISBN : 978-93-820130-6-8

अमावस्यामे दीप सन स्त्री
(मैथिली कविता-सग्रंह)

© कामिनी

प्रथम संस्करण : 2024
मूल्य : 200 रु.

आवरण : साभार

प्रकाशक
नवारम्भ
मधुबनी : श्री भवन, वार्ड न.-2,
निकट राम-जानकी मन्दिर, बिहार- 847211
पटना : 63, एम.आई.जी.
हनुमान नगर, पिन-800020
Email : navarambhprakashan@gmail.com
मो॰- 09304349384

मुद्रक
आर. के. ऑफसेट प्रोसेस
नवीन शाहदरा, दिल्ली

Amavasya Me Deep San Stree
A Collection Of Maithili Poems By **Kamini**
First Edition : 2024, Price : Rs 200/-

विवाहक एहि रजत जयंतीक विशेष अवसर पर अपन ई पोथी
हम अपन श्रीमानकेँ समर्पित क' रहल छियनि
जिनक योगदान हमर साहित्यिक यात्रामे महत्वपूर्ण रहल!

अपन बात

लोक कहैत अछि स्त्री एवरेस्ट पर चढ़ली, जेट विमान उड़ा रहल छथि, जीवनक ओ सभटा महत्वपूर्ण काज जे काल्हि तक वर्जित छल स्त्रीक लेल, आइ स्त्री क' रहल छथि। स्त्री शारीरिक आ बौद्धिक रूपें सभ तरहें सक्षम भ' हरेक क्षेत्रमे अपन उपस्थिति दर्ज करा रहल छथि। ने स्त्री आब असूर्यम्पश्या रहलीह आ ने आब स्त्रीक लेल कोनो क्षेत्र वर्जित। स्त्री अपन जिम्मेदारी घरसँ बाहर धरि नीकसँ निमाहि रहल छथि। एहना स्थितिमे स्त्री विमर्शक कोन खगता? स्त्री विमर्श त' तखन ने होइतैक जखन स्त्रीक बाट रोकल जइतैक! स्त्रीकेँ कमजोर मानि स्त्रीक संग अलग व्यवहार कयल जइतैक! स्त्रीक क्षेत्र घरे-परिवार धरि सीमित रहितैक! स्त्री सांसारिक वंचनाक शिकार भ' घरक एकटा कोनमे बैसि नोर बहबैत रहितथि! आकि स्त्री पर लगाओल जइतैक ओहन कोनो प्रतिबंध जे स्त्रीक मान-सम्मान लेल विपरीत होइतैक! से जँ नहि त' स्त्री विमर्शक फेर खगता की? किछु लोक त' इहो कहैत सुनल जाइत छथि जे आब स्त्री विमर्शक नहि, पुरुष विमर्शक खगता अछि। कारण, किछु पुरुष स्त्री द्वारा त्रासित छथि। भ' सकैत छै हुनका बातमे आंशिक सत्यता होइ!

मुदा जखन कोनो विमर्शक शुरुआत कयल जाइत अछि त' समूहकेँ ध्यानमे राखिक'। जँ एकटा समाजक सभ स्त्री-पुरुष सम भावे जीबि रहल छथि त' हम कहि सकैत छी ओ समाज सुखी अछि। जँ दोसर समाजमे किछु स्त्री आ किछु पुरुषक बीच समताक भाव छै आ किछु स्त्री-पुरुषक बीच वैमनस्यता, लिंगभेद, अशिक्षा त' हम ओहि समाजकेँ ने आधा सुखी आ ने आधा दुःखी कहि सकैत छी। हम कहब जे ओ समाज पूर्णतः दुःखी अछि। ओहि समाजमे समता नहि विषमता छै, स्त्री आ पुरुषक बीच, आ कोनो समाज तावत विमर्श माँगैत रहत, यावत समाजक सभ प्राणी चाहे ओ स्त्री हो वा पुरुष एक-दोसराक हाथे दंडित, त्रासित होइत रहत।

समाज विकास कयलक अछि, एहिमे कोनो दू मत नहि। स्त्री

पुरुषक बीच दूरी कम भेलैए। शिक्षासँ रोजगार धरि स्त्री अपन उपस्थिति दर्ज करौलक अछि। आइ स्त्री किछु एहनो काज क' रहल छथि जे कखनो-कखनो पुरुषोक लेल कठिन अछि। मुदा की समाजक सभ स्त्रीमे ई बदलाव आयल अछि? की सभ स्त्री स्कूलसँ कॉलेज धरि पहुँचल अछि, सभ स्त्री अपना पैर पर ठाढ़ भ' अपन जीवन जीबैत अछि अपना हिसाबे? की स्त्री संग बलात्कार नहि होइत अछि? की सभ परिवारमे स्त्रीक मान-सम्मान सामान्य रूपसँ मान्य अछि? की दहेज नहि लेल जाइत अछि आ नहि देल जाइत अछि? वा दहेजक नाम पर निर्दोष स्त्रीक हत्या बंद भ' गेल? की पिता उत्तराधिकारी रूपमे पकड़ैत छथि पुत्रीक हाथ? की परिवार बेटीक सुख-दुखसँ रखैत अछि अंत-अंत धरि सरोकार वा विवाहोपरांत ओकरा आन बूझि नहि क' लैत अछि ओकर सुख-दुखसँ अपनाकेँ कात? स्त्री की एखनो मनुक्ख मानल जाइत छथि वा मात्र देह रूपमे स्त्रीये, जकरा पुरुषक लोलुप आँखि करैत रहैत अछि पाछाँ बड़ निर्लज्जतासँ? की स्त्रीकेँ स्त्री हेबाक दण्ड नहि भोगय पड़ैत छै आब? से जँ नहि त' स्त्री विमर्शक खगता काल्हियो छल आ आइयो अछि।

एकटा स्त्री हेबाक नाते हम जनैत छी स्त्रीकेँ भोगय पड़ैत छैक ओ सभटा दंड जे ओकरा हिस्साक नहि रहैत छैक। स्त्रीकेँ सहय पड़ैत छैक ओ सभ अन्याय जकरा ओकर मोन नहि मानैत छैक। जाहि लेल ओकर आत्मा चित्कार करैत छैक। एकर पहिल शुरुआत होइत छैक ओहि परिवारसँ जाहिमे स्त्री जन्म लैत अछि। पलैत-बढ़ैत अछि। शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करैत अछि आ तय करैत अछि जतयसँ आगूक बाट।

जे पिता बच्चामे बेटीकेँ कोरासँ उतारैत नहि अछि। सुग्गा-मैना कहि दुलार-मलार करैत अछि। ओ अपन उत्तराधिकारी रूपमे हाथ पकड़ैत अछि बेटाक। स्त्री संग पहिल घात होइत अछि एत्तहिसँ। जे माय नौ महिना कोखिमे रखैत अछि, छातीसँ लगा दूध पियबैत अछि। केश-खोपा बान्हैत अछि। शृंगार-पेटार ओरियबैत अछि, हाथ पकड़ि लिखनाइ-पढ़नाइ सिखबैत अछि से खोंइछामे दूभि-धान द' विदा करैत कहैत अछि बेटीकेँ—''बेटी सासुरे नीक कि बेटी स्वर्गे नीक''। आ बेटाकेँ अपन मोक्षदाता मानि पकड़ि लैत अछि हाथ, उठा लैत अछि अपना माथ पर। जे भाइ संगहि-संग स्कूल-कॉलेज जाइत अछि, संगहि सपना बुनैत अछि, से सियान होइतहि भ'

जाइत अछि घरक मालिक आ बहिनकेँ बुझैत अछि मेहमान। पेट भरि खाथु आ देह भरि वस्त्र पहिर विदा होथु। भूलोसँ एहि घरकेँ अपन कहक भूल नहि करथु। जँ एहन भूल भेल त' सम्बन्धक सभ तारक ओतहि निस्तार आ जाहि पुरुषक संग बिआहल जाइत अछि स्त्री से जँ सहृदय रहल त' बेस, नहि त' जीवन जीनाइ कठिन भ' जाइत अछि एकटा स्त्रीक लेल।

जाहि समाजमे स्त्री रहैत अछि ओतय की स्त्रीक संग अन्याय नहि होइत अछि? बहुत होइत अछि अन्याय। शारीरिकसँ मानसिक रूपें तोड़ल जाइत अछि स्त्रीकेँ। जँ सक्षम छी आर्थिक रूपें त' शारीरिक लांछना। जँ आर्थिक रूपें कमजोर छी त' विभिन्न तरहक ब्योंत लगा दोहन करैक प्रयास कयल जाइत अछि। जे स्त्री आर्थिक आ शारीरिक रूपें सक्षम अछि ओकरा समाज कोनो ने कोनो तरहे जमीन पर आनक प्रयास करैत अछि। कारण, एखनो समाजमे पुरुषक बहुलता अछि। समाज पुरुष प्रधान अछि। स्त्री शक्ति ओतय गौण वा एना कही जे पितृसत्तात्मक समाज मातृसत्तात्मक समाजक कल्पनोसँ दूर अछि एखन। ओना हम मनैत छी जे समाज समतामूलक हो तखनहि परिवारमे सामंजस्यक स्थापना संभव। जाधरि परिवारमे सामंजस्यक स्थापना नहि होयत, ताधरि सरकार कानून बनबैत-बनबैत थाकि जायत, सामंजस्य स्थापित नहि भ' पाओत समाजमे।

स्त्री-पुरुषक बीच जे विषमता अछि ओकरा परिवारे खाद-पानि द' क' सींचैत अछि, पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित करैत अछि। से जँ नहि रहितै त' पैतृक सम्पतिमे कहिया ने सरकार बेटीकेँ बराबरिक मालकिन बना देलक मुदा आइयो स्त्री करुणे करैत ठाढ़ अछि कातमे –''भैया के लिखल छल बाबा के सम्पतिया हमरो पर के हे आस'' आ जाधरि ई परक आस लागल रहतै, ताधरि स्त्री गाछसँ टूटल पात जकाँ हवाक झोंकमे उधियाइत रहत एम्हर-ओम्हर। हम मनैत छी स्त्रीकेँ अपन अधिकार लेल अपनहि आबय पड़तै आगू। परम्परावादी ई परिवार आ ई समाज पुत्रमोहसँ एतेक सहजतासँ आबि जायत बाहर से संभव नहि। एहि परम्पराकेँ तोड़य पड़तै, ककरो ने ककरो आगू बढ़य पड़तै।

जाहि समाजमे एखनो स्त्री देह रूपमे उपभोगक वस्तु मानल जाइत अछि, ओहि समाजसँ हम आस कोना लगा सकैत छी जे ओ सम दृष्टिये देखत स्त्री आ पुरुषकेँ। आदि कालसँ पुरुष लालायित रहल अछि देह

रूपमे स्त्रीक लेल। ओ स्त्रीक आकर्षणमे बन्हाइत अछि आ ब्रेड-बटर जकाँ उपयोग क' चलि जाइत अछि स्त्रीक संसारसँ दूर। स्त्रीक मान-सम्मान भ' जाइत अछि ओकरा लेल अदना। ओ बिसरि जाइत अछि जे जाहि स्त्री देहक संग ओ आहार-विहार क' रहल अछि, ओकरोमे मन-प्राण अछि, भावना-संवेदना अछि। ओहो जीबय चाहैत अछि एकटा सामान्य जीवन, जे सभ जीबय चाहैत अछि। अधिकांश पुरुषक प्रवृति आ प्रकृति पुरुषकेँ मनुक्ख बनय नहि दैत अछि। ओकरा दानव बनाक' छोड़ैत अछि। एहेन बात नहि अछि जे एहेन तरहक सभ पुरुष जीबि लैत अछि सम्मान भरल जीवन। किछु पुरुष त' जीवनपर्यन्त जहलेमे जीवन बितबैत अछि। किछु समाजोक नजरिमे खसैत अछि मुदा जाधरि पुरुष अपना नजरिमे अपनहि ने उठत आ ने खसत ताधरि ओकर प्रवृति आ प्रकृति बदलतै नहि।

आत्मोत्कर्ष तखनहि संभव जखन आत्म-मूल्यांकन हो। बिना गुण-दोषमे भेद कयने लोक कोना जानि सकैत अछि जे की सही, की गलत! ई समस्या अविकसिते समाज धरि सीमित नहि अछि, पैघसँ पैघ समाजमे एहेन तरहक दानवीय प्रवृति हावी अछि पुरुष पर। ई अलग बात जे ने सभ स्त्री त्रासित अछि आ ने सभ पुरुष एहेन तरहक प्रवृतिकेँ। सभ रंगक स्त्री-पुरुष अछि सभ समाजमे। किछु पुरुष त' एहनो देखलहुँ जे अपन चद्दरि उतारि स्त्रीकेँ झाँपन दैत अछि। अपन जान पर खेलि स्त्रीक मान-सम्मानक रक्षा करैत अछि।

संगठनक अभाव स्त्री समाजमे सेहो देखल गेल अछि। जँ माय, मैंयाँ, काकी, नानी एक भ' जाउ त' पिता, बाबा, काका, नानाक दिन छियनि जे स्त्रीक संग रहि, स्त्रीक विरुद्ध षड्यंत्र करताह! ओकरा चल-अचल सम्पतिसँ बेदखल करताह! जँ परिवारमे बराबरिक अधिकार प्राप्त भ' जाय बेटा-बेटीकेँ त' बहुत रास समस्याक समाधान स्वतः भ' जायत। नेनेसँ जे बेटाकेँ मजबूत आ बेटीकेँ कमजोर बना प्रस्तुत कयल जाइत अछि जीवनक रंगमंच पर, ओ भविष्यमे नींवकेँ हिलाक' राखि दैत अछि। बेटीकेँ जँ बेटाक बराबरि अधिकार प्राप्त भ' जायत परिवारमे त' भविष्यक प्रति जे अनिश्चितता ओकरा मनमे घर कयने रहैत छै, जाहि कारणे ओ बहुत तरहक अन्याय मजबूरीमे सहैत अछि, से सहबाक लेल ओ विवश नहि होयत। ओ परिस्थितिक सामना करत, आत्मबलसँ।

एहि संग्रहक प्रायः सभ कविता यथार्थक भाव-भूमि पर रचल-गढ़ल गेल अछि। जखन परिस्थितिवश सत्यकेँ सत्य आ झूठकेँ झूठ नहि कहि पबैत छी त' मन कचोटय लगैत अछि। होइत अछि तहस-नहस क' दी एहि सभ व्यवस्थाकेँ जे स्त्रीकेँ एखनो मात्र स्त्री बुझैत अछि, मनुक्ख नहि। तिलांजलि द' दी ओहि सभ व्यवस्था, सभ सम्बन्धकेँ जे ''विषकुंभ पयोमुखम्'' सँ आप्लावित अछि। आखिर ककरो ने ककरो त' आगू अबइए पड़तै। ककरो ने ककरो त' आवाज उठबइए पड़तै। लोक जँ हाथ पर हाथ धएने बैसल रहत परिवर्तनक आस लेने त' परिवर्तन नहि हेतैक कोनो जनममे।

ओहने विकट स्थितिमे कलम बनैत अछि हमर नाव, भावना-संवेदना हमर पतवार। बीच भँवरमे गोल-गोल घुमैत कखन पार क' जाइत छी ई मझधार, पता नहि चलैत अछि। तूफान बितलाक बाद जेना सभ किछु शांत भ' जाइत अछि तहिना कविता लिखलाक बाद हमर मोन। शब्दे हमर सहारा बनैत अछि जीबाक लेल। शब्दविहीन जीवनक कल्पना ने आइ करैत छी आ ने आगुओ करब!

—कामिनी

कविता-क्रम

13 : माय-1
14 : माय-2
17 : माय-3
20 : माय-4
23 : माय-5
26 : माय-6
30 : माय-7
32 : माय-8
36 : माय-9
41 : माय-10
43 : माय-11
49 : भाव-हिंसा
51 : उपकार
53 : मेला
55 : जेबी महक रूमाल
57 : एक कप चाह
61 : विषकन्या
64 : चारिटा रोटी
67 : अहाँकेँ हमर सप्पत छी
69 : छौड़ी
71 : आत्मोत्सर्ग
74 : दशरथ माँझी
77 : चिरयौवना
79 : गैर जमानती वारंट
83 : आर्यपुत्र
85 : पुरुषक झुंड
87 : छी घरक मलिकानि मँगै छी दूगो खुद्दी
90 : धर्मक बेटा
92 : यात्रा

94 : ई हम कोना मानि ली
96 : सामान्य स्त्री
98 : स्मृति
101 : हमर जन्मदिन
105 : निर्माण आ विध्वंस
107 : एकटा आम स्त्रीक सुसाइड नोट
111 : प्रेमविहीन जीवन
113 : पुरुष
116 : प्रेमक भाव
118 : सिनेहक छाहरि
120 : दाइ
123 : लेखा-जोखा
125 : खंडित मूर्ति
128 : शांति कुटिर
130 : अमावस्यामे दीप सन
133 : परित्रासित स्त्री

माय-1

माय! जँ जीवनमे
कहियो कोनो रूपमे
हम सफल भेलियौ
त' ओहि सफलताक वर्ल्डकप
हम तोरे समर्पित करबौ
ई हमर सत अछि
तोरासँ

तोरा मोनमे जे
नहि पढ़ि पेबाक क्षोभ छौ
हम चाहैत छी
एहि दुनियाँसँ
दूर जयबासँ पहिने
मेटा जाउ
तोहर ओ क्षोभ

तोरा लगौ जे
तोँ नहि त'
तोहर बेटिये सही
मान-सम्माक
ओ सभ लक्ष्मण-रेखा
पार कयलक
जाहि पर
एकटा स्त्रीक
जन्मजात अधिकार छै।

•

माय-2

मायक जीवनक
अधिकांश समय
चिपड़ी पथैमे
धान कुटैमे
गहुँम पीसैमे
अँगना नीपैमे
भानस करैमे
सभकेँ परोसि
खुआबैमे
सभक सभटा बेगरता
शांत करैमे
बीति गेलै

ओ जीवनमे
नहि गेल स्कूल-कॉलेज
नहि पकड़लक हाथमे
किताब-कॉपी
पेपर-पत्रिकामे
की लिखल छै
नहि पढ़लक बात
दिन-दुनियाँमे
कत' की भ' रहल छै
ताहिसँ अन्जान रहल
ओकर ज्ञान-विज्ञानक यात्रा
सासुरसँ नहिरे धरि
रहलै सीमित

ई यात्रा
ओ अपना लेल
अपने नहि
निर्धारित कयने रहै
ई निर्धारित कयने रहथिन नाना
मायकेँ स्कूलसँ
दूर रखैत
ई कहैत—''बेटा पढ़त त'
दिन-दुनियाँ सम्हारत
बेटी पढ़िक'
की करत?
घरे त' चलायत
भानसे-भात त' करत''
आ एहि तरहेँ
माय अनपढ़
राखल गेल
कुव्यवस्थाक छोलनीसँ
दागल गेल
जकर टीस
आइयो छै ओकरा

कएक बेर
माय लेल हम
सिलेट-पिंसिल ओरियेलहुँ
पढ़बै लेल
अपने बैसेलहुँ
धरि हर, जन, सम्हारैत
गृहस्थीक भार उठबैत
चाहियोक' ओ
नहि पढ़ि पओलक

जकर टीस
आइयो अछि हमरा

माय! तोरा लेल हम
किछु नहि क' सकलियौ
तोरा दू आखरक
बोधो नहि करा सकलियौ
जखन कि ई जीवन
तोरे अमानति
तोरे देन छियौ
धरि एतेक वचन
हम दैत छियौ
हमर कहब
ओ सभ बात
जे तूँ
नहि कहि सकलें
हम पढ़ब
ओ किताब
जे तूँ
नहि पढ़ि सकलें
हम लिखब
ओ सुख-दुःख
जे तूँ
नहि लिखि सकलें!

•

माय-3

करीब-करीब अस्सीक
भ' गेल होयत माय
सुनिश्चित त' हमरा
अपनो जन्मदिन
नहि ज्ञात अछि
तहन अनुमाने मात्र आधार
चैत वा बैशाख
जेठ वा अषाढ़
भोरमे कि साँझमे
एहने सन किछु

माय एखनो
जीवनक चारिम अवस्थामे
पहुँचलाक बादो
करैत अछि
हमर चिंता
निपैत अछि अँगना
हमर अबैया जानि
बनबैत अछि
हमरा लेल
बरी-भात
आ कने मोन
द'ब की होइत अछि
बैसि जाइत अछि
पैर लग तेलक माली ल'

एखनो जीवा-जंत जकाँ

ओरियाक' रखैत अछि
हमरा लेल
पाँच सय-हजार टाका
आ घुरैसँ पहिने
हाथमे दैत
कहैत अछि—
''हे ई लेने जो
एहिसँ चूड़ी-सिनूर
कीनि लीहें''
आ आँचरक खूटसँ
पोछि लैत अछि आँखिक नोर
ई कहैत जे—
''एतेक टाक राजपाटमे
तोहर एतबे अधिकार

सोचैक लेल
विवश भ' जाइत छी
जँ काल्हि
माय नहि रहत
''मृत्यु ध्रुव सत्य अछि त'
ई सुनिश्चिते अछि''
त' केहन होयत
हमरा जीवनक रूपरेखा
कानब कि हँसब
के पूछत हाल
जीयब कि मरब
ककरा पड़तै अंतर

आ बिनु मायक
नैहरो कोनो नैहर
होइत अछि

सम्बन्धक तराजू पर
जोखाइत रहब
कखनो उदास
कि कखनो ल'त
एहि कातसँ
ओहि कात!

•

माय-4

''भैया के लिखल छल
बाबा के सम्पतिया
हमरो पर के हे आस''
अकसरहाँ ई गीत
गबैत-गबैत
माय कानय लगैत अछि
आँखिसँ बहय लगैत छैक
दहो-बहो नोर
किछु अपन दुख
किछु हमर दुख
किछु आइ-माइक दुख
सालय लगैत छैक
हृदयकेँ

जाधरि नाना जीबैत रहलाह
बराबरिक बात
करैत रहलाह
बेटा आ बेटीक बीच
धरि नानाक परोछ होइतहि
माय भ' गेल पराया
बराबरि के कहय
जे कनमो आ पौओ पर
लागय लागल
बड़का मामा
आ छोटका मामाक बीच फाँट
ई अलग बात
जे काज-तिहारमे

माय बजाओल गेल
बराबर-बराबर
दुनू दिस

जाधरि पिता जीलाह
कहैत रहलाह
''हमरा लेखे
बेटा की
आ बेटी की
दुनू बराबर''
हमरो छाती
सूप सनक होइत रहल
ई बात सुनि-सुनि
होइत रहल
एतेक टाक साम्राज्यक
एकटा अधिकारिणी हमहुँ छी

धरि पिताकेँ
परोछ होइतहि
बूझ' लगलहुँ
बेटा आ बेटीक भेद
कहबा आ करबाक बीच अंतर
आब त' स्थिति
एहेन अछि
कि मुँहोसँ
जँ कहब
''ई घर हमर
एहि सम्पतिक अधिकारिणी हमहुँ''
त' डर अछि
सम्बन्ध नहि बाँचत

धरि तैयो
हम कहबै मायसँ
दुख नहि कर
आँखिसँ नोर
नहि बहा
अपनो लेल आ हमरो लेल
बाबाक सम्पति आब
भैयेटाक नाम नहि
दैय्योक नाम केलनि अछि सरकार
ई अलग बात
जे हम की मँगैत छी
अहाँ की दैत छी!

•

माय-5

जखन बच्चा रही त'
माय संगे जाइ
मामा गाम
बड़द गाड़ी पर बिदागरी भ' क'
आ ओही गाड़ीसँ होइ
मौसियोक बिदागरी
कारण एही बिदागरीक
सहुलियत सोचिक'
नाना बियाहने रहथि
दुनू बेटीकेँ
एकहि गाममे

पुबाइ टोलमे
मौसीक घर
आ पछबाइ टोलमे
हमर घर
लियोन-हकार
बैन-तिहार
खूब चलय
दुनू बहिनीक बीच

एतेक सागो-पात जे होइ
बाड़ी-झाड़ीमे
मौसी अपने ल' क'
पहुँचि जाइ साँझे-सकाल
मौसमी फल त' सहजहि

मौसी हाथक
तिलकोरक तरुआ
एखनो मोन अछि हमरा

से एक्के बड़द गाड़ी पर बैसल
माय आ मौसी
संगमे हम आ
हमर मसियौत छोटकी बहिन
लोकदिनियामे जाइत रही
सभ काज-परोजनमे
बिदागरी भ' क'
मामा गाम
आ घरक लगीच अबितहि
दुनू बहिन नियारि लीय
कि घओना करबाक छैक
जोर-जोरसँ
''माय गे माय, बाबू यौ बाबू''

एक बेर त' एना भेल
माय कानय लागल
आ मौसी चुप्पे रहि गेल
भगवती घर तक
खोंइछ झाड़लाक बादो धरि
कानि-खीजिक'
माय जखन निवृत भेल
त' खिसिआयल मौसी पर
''कहू ई हमरा आगू बढ़ा देलक
आ ई पाछूसँ एक्को बेर
टाहि तक नहि उठेलक
एसगरे कनैत-कनैत
हम थाकि गेलहुँ''

आब मौसी
नहि छथि जीबैत
आ ने नाना आ ने नानाक
ओ बड़द गाड़ी
हमहुँ सभ
दूर देश
परदेश बसैत छी
माइयोक अवस्था
आब चारिमे छैक
बिदागरी त' तैयो
ओकर हेबे करैत छैक
बेस नम्हर चौरगर
परिवार छैक नहिराक
नहि ओना घुरिक'
कियो खोज करै
काज-तिहारमे
बिनु बहनीक
लियोन-हकारे
काज कोना सम्पन्न होयत

लोक रीति-नीतिकेँ
ध्यानमे रखैत
भाइ-भातिज
बिदागरी त' अबस्से करबैत छैक
मुदा आब बड़द गाड़ी पर नहि
पँचलखिया-दसलखिया कार पर
एतेक प्रगति त'
करबे कयलक परिवार
नाना भलेहि छलथि किसान।

•

माय-6

नाना देने रहथिन
मायकेँ दुरागमनमे
एकटा काठक बक्सा
अकसरहाँ माय करैत छल
एहि बातक चर्चा
''अपन कटहरक गाछ कटबाक'
तोहर नाना बनबेने रहथुन
हमरा लेल ई काठक बक्सा
जकर पानि देखहिन ने
कतेक साल बितलाक बादो
उतरलै कहाँ एखन धरि''

जाहि बक्सामे
भरल अछि
रंग-बिरही समान
सिक्कीक मौनी
सिक्कीक पौती
सिक्कीक माछ
सिक्कीक चँगेरीक संग-संग
अनेको तरहक वस्तुजात
जनउक लच्छा
टेकुरी, कट्टा
फुलही थारी-बाटी, लोटा-गिलास
दालिरन्हा-भतरन्हा
सिनूरक थाक
अयना-कंघी

फित्ता-चोटी
कतेको तरहक
साँठक समान

मायकेँ जखन कखनो
मोन पड़ैत छलखिन नाना
मोन पड़ैत छलखिन नानी
मोन पड़ैत छलैक
अपन गाम-घर
संगी-सहेली
ओ खोलिक'
बैसि जाइत छल
अपन काठक बक्सा लग
आ उनटाबैत-पुनटाबैत
निहारैत रहैत छल
एक-एक सामानकेँ
एकटा सुखद स्मृतिक रेखा
सहजहि पसरि जाइत छलैक
ओकरा मुँह पर

नानाक देलहा माय लग
आरो बहुत किछु छल
जेना कि कान महक सोन
गरदनि महक चौअन्नीक छड़
डाँड़ महक डँड़कस
हाथ महक सकुआ
पैरक छड़की काड़ा
जकरा ओ
चदराक पेटीमे
सात तहकेँ

नुकाक' रखने छल
हमरा लेल
जे हमहुँ साँठब
अपन बपौती सम्पति
अपना बेटीकेँ

बेसी किछु त' नहि
तहन गरदनि महक चौअन्नीक छड़
आ हाथ महक सकुआ ल'
हमहुँ अयलहुँ
अपन सासुर
आ हमरो
जखन कखनो मोन
पड़ैत अछि माय
गाम-घर
संगी-सहेली
हमहुँ गोदरेज खोलि
पहीरि लैत छी
गरदनिमे चौअन्नीक छड़
हाथमे सकुआ
एकटा सुखद
स्मृतिक रेखा
पसरि जाइत अछि
हमरो मुँह पर

ई अलग बात
जे माइयो लग छैक
आब बेस नम्हर ट्रंक
आ हमरो लग अछि
गरदनि महक चन्द्रहार

हाथक कंगन
मुदा ने मायक मोन भरलै
ओहि कठही बक्सासँ
आ ने हमर मोन भरल
ओहि चौअन्नीक छड़
आ ओहि सकुआसँ!

•

माय-7

सोचैत छी
जँ काल्हि माय
नहि रहत
त' गाम जेबाक
प्रयोजने समाप्त भ' जायत
जँ लिलसावश
गाम जेबो करब
त' ककरा लग जाक'
ठाढ़ होयब
के एक लोटा पानि देत
के एक थारी भात
हकासल-पियासल
ताला लागल घरक
अँगनामे ठाढ़ होयब असगरे

जँ पिता रहितथि
जीबैत आइ
त' हाट-बजार जइतथि
तीमन-तरकारी ओरियबितथि
दूध-दहीक व्यवस्था करितथि
बेर-बेर देखितथि
घड़ीमे समय
आ चिंतातुर भ'
तकितथि हमर बाट

एकटा पिताकेँ
नहि रहने

सभ किछु रहितो
किछु नहि अछि बाँचल गाममे
जाधरि पिता जीबैत छलाह
स्नेह-सत्कारसँ
अनैत छलाह
आ माँझ आँगनमे
ठाढ़ भ' क'
कहैत छलाह
''हमरा लेखे बेटा की
आ बेटी की
दुनू बराबर''
सूप सनक छाती
होइत छल
ई सभ सुनिक'
होइत छल
एतेक टाक परोपट्टाक
कोनो ने कोनो कोनक
मालकिन होयब हमहुँ
एहि गाम घरक
हिस्सा बनब हमहुँ
हलाँकि एक्कोटा बात
ओ नहि केलाह पूर्ण
अपना जीवनमे

आइ पिता नहि छथि
आ माय जीवनक
चारिम अवस्थामे
आ राजपाटक उत्तराधिकारी
भाइ साहब

त’ अपने घर-अँगनामे
आन लगै छी
अपने लोकक बीच
मेहमान लगै छी
आदतवश
जँ मुँहसँ
निकलैत अछि
ई हमर घर
ई हमर अँगना
ई हमर खेत-खरिहान
त’ तनि जाइत छनि
भाइ साहबक भ्रुकुटि
होइत छनि
ई बहिन नहि
हिस्सेदार भ’ गेल
जतेक जल्दी
प्रस्थान करय
सैह नीक

मोन थिर क’
जखन बैसैत छी
त’ लगैत अछि
मन-मन्दिरमे स्थापित
जे मूर्ति
काल्हि पूजित छल
ओ आइ खंडित अछि
ककर-ककर पूजा करी
आ ककर-ककर विसर्जन!

•

माय-8

बच्चेसँ देखैत आयल छी
मायकेँ जितियाक व्रत करैत
निर्जला निराधार
दू साँझ, तीन साँझ
जतेक साँझ धरि
समय निर्धारित कयने होथि
पाड़नक पंडित पतरा

मैंञों करैत छल
एहिना जितियाक उपास
ठोर पर फुफड़ी पड़ैत
पेट-पाँजर तर
बिनु पानिक माछ जकाँ
छटपट-कछमछ करैत
धाइ जितवाहन
पार लगबिह'

माय कहैत छल
ई धर्मक जाँच छियै
भगवान ऊकसँ
उकियबैत छथिन
के हारैत अछि
के जीतैत अछि
ई हारि-जीतक खेल
होइत छल
बड़ भारी बड़ कठिन

माय इहो कहैत छल
ई व्रत केवल
पुत्रवती स्त्री करैत अछि
जकरा पुण्ये-प्रतापे
यमराजोक मुँहसँ
घुरि अबैत छै पुत्र

धकसँ उठैत छल छाती
एहि तप-त्यागक बीच
हम कतहु नहि छी
कियो नहि करैत अछि
हमरा जीवनक लेल कामना
हम मरी कि जीबी
कोनो धर्मशास्त्र
कोनो लोक रीति-नीतिकेँ
नहि छैक एहिसँ
कोनो सरोकार

सोचैत छी
कतेक अवांछित
कतेक उपेक्षित
अछि स्त्रीक जीवन
जकरा भेला
नहि भेलासँ
कोनो अंतर
नहि पड़ैत छैक
ओहि समाजकेँ
जे स्त्री द्वारा
संचालित रहितहुँ
रखने अछि स्त्रीकेँ

अपना मुट्ठीमे
आ आश्चर्य
जे कोनो प्रतिक्रिया
कतहुसँ
नहि अबैत अछि
कोनो प्रतिकार कियो
नहि करैत अछि!

•

माय-9

एकटा पैरमे
काँटो जे गड़ै
माय तोहर प्राण
भ' जाउ एतबे टाक
माथो की गर्म होइ
चिंतातुर भ' उठै
''छौड़ीकेँ ज'र भ' गेलै
की हेतै नहि हेतै
से नहि कहि''
एक रती डाँर-पीठ
कि दुखाय
तेलक माली ल'
बैसि जाइ तूँ
लक्ष काजकेँ
कात करैत

तोहर जीवनमे
हमर स्थान रहै सर्वोपरि
अपने निरक्षर रहितो
हमरा पढ़बैक प्रति
रहलें तूँ सजग
घरक राज-काजसँ
रखलें दूर
ई कहैत जे
''काज करैक लेल त'
जीवन पड़ल छौ

एखन पढ़बाक समय छौ
पहिने पढ़''

कतबो भरल रहैत छल पेट
जखन तूँ खाइ लेल बैसें
बिना दू क'र हमरा खुएने
कहाँ खाइत छलें तूँ
कही– ''बच्चाकेँ खुएने
मायकेँ संतोष होइत छैक!''
आ एहि बातक अनुभव
भेल हमरो तहिया
जहिया हम माय बनलहुँ

बिना हमरा पुछने
''की बनतौ आइ''
कहाँ भानस करै तूँ
एहि बातक लेल
कएक बेर
बजबो करौ
मैंयाँ तोरा
''एतेक कतहु बच्चा सभकेँ
पुछि-पुछि भानस होइ''
तैयो हमरा रुचियेक अनुरूप
करैत रहलें भानस तूँ
मन नहि अछि
कहियो कोनो इच्छा
हम व्यक्त कयने होइ
आ तूँ ओकरा
नहि कयने हों पूर

मोने अछि
जहिया पहिल बेर
हम गेल रही सासुर
दू दिन धरि
अन्नक एकटा दाना
नहि ग्रहण कयलें तूँ
घुरिया-घुरिया जाही
आ केबाड़क पाटक अ'ढ़मे
कानय लगही जोरसँ

लोक कहय हमरा
''माय कनैत छथि
बोल-भरोस दियनु ग''
ताहि दिनमे
हमरा ई नहि
समझमे आबय
जे तूँ एना
हको-प्रत्याशित भ'
कनैत कियैक छीही
हुए आइ जाइत छी
किछुए दिनमे घुरि आयब घर
जहिना हॉस्टलसँ अबैत रही
दू-चारि मास पर

ओहि दिनमे
ई नहि बुझी
ई कानब तोहर
हमरे लेल टा नहि
अपनो लेल छौ
जाहि व्यथाकेँ

तूँ दबेने छें हृदयमे
एतेक सालसँ
ओकरा हमरे माध्यमसँ
निकालैत छें बाहर

अपना घर-परिवारसँ
शारीरिकेँ रूपें नहि
मानसिको रूपें
दूर होयब
कतेक कठिन होइत अछि
एकटा स्त्रीक लेल
से आइ हम बुझैत छी

आइ हम बुझैत छी
वास्तवमे बेटी
सामान्य घर-परिवारमे
होइत अछि
दोयम दर्जाक नागरिक
जकरा समय आ परिस्थितिक अनुरूप
कलम लगा देल जाइत छैक
दोसरक घर-परिवारमे
आ ओकरा जीवनमे
तकर बाद
पतझड़ अबै वा वसंत
ओकर भाग्य मानल
जाइत छैक

माय, जखन देखैत छियौ तोरा
आ अपन सम्पूर्ण परिवारकेँ
हमरासँ आँखि बचा

किछु काज करैत
कान दबा किछु बात करैत
त’ लगैत अछि
विश्वासक देबाल
ढनमनाक’ खसय लागल
जहिना खसल रहय
कमला-कोशीक वेगमे
मूस खेलहा
भीतवला दलानक देबाल

तहन लगैए माय
किछु नहि बचल अछि
एहि जीवनमे शेष
रहि गेल छी हम
नितांत एसगर
सम्बन्धक मकड़जालमे
बेधाइत-छटपटाइत।

•

माय-10

माय तोरा पेटमे
जखन हम आयल रहियौ
त' तोरा एहि बातक
अनुभव भेल रहौ
कि हम बेटा नहि
बेटी छियौ
वा कल्पनोमे
एहेन तरहक दुश्चिंता
घेरने रहौ
कि ई गर्भ
जँ बेटियेक हुअए त'
की होयत?

जखन हमर जन्म भेल होयत
आ ई बात
कहने होउ कियो
''यै फल्लाँ गामबाली
अहाँकेँ बेटी भेल अछि''
त' सत कह
ताहि घड़ी
कचोटने रहौ ई बात कि
''हे! भगवान
एकर जन्म कियैक देलियै
जँ ई बेटा नहि रहय''

माय जखन छातीमे
उतरल रहौ दूध

त’ हमरा छातीसँ लगबैत
हमरा दूध पिआबैत
एको बेर ई बात
आयल रहौ मोनमे
कि एकरा जेहने दूध पिएने
तहिना नहि पिएने
ई कोनो बेटा छी
ई त’ बेटी छी!

माय! कोनो पाबनि-तिहारमे
कोनो नीक-बेजायमे
हमरा सम्मिलित करैत
जखन तोरा
एहि बातक दुःख नहि भेलौ
जे हम तोहर
बेटा नहि छी
तहन फेर आइ कियैक
ई कहि पराया करैत छें
“तूँ हमर बेटा नहि, बेटी छें
मुक्ति त’ हमरा
बेटे हाथे हैत”

माय! हथौड़ाक चोट सन
सीधे हृदय पर
करैत अछि
तोहर ई शब्द प्रहार
जखन कि हम जनैत छी
हमरो धमनीमे
तोरे खून बहि रहल अछि
जे भाइक धमनीमे बहैत छैक! •

माय-11

एकटा पिताकेँ
नहि रहने
माय एतेक एसगर भ' गेल
कि आधो जीबे
जँ कियो लैत अछि
पिताक नाम
त' झहड़य लगैत छैक
ओकरा आँखिसँ
सूपक सूप नोर

कहैक लेल त'
भरल-पूरल परिवार छैक
बेटा-पुतोहु, बेटी-जमाय
नाति-नातिन
अरिजन-परिजन
सर-समाज
मुदा
''पानी बिच मीन पियासी'' सन
मायक मोन
एकटा पिताक बिना
खिन्न रहैत अछि सदिखन

हर घड़ी पिता
प्रतिछाया बनि
बैसल रहैत छथि
मायक माथ

आ माय माथ पर उठौने
पिताक भारकेँ
जीबि रहल अछि
जेना-तेना
सदिखन यैह बजैत
''एतेक लोक मरैत अछि
हम कहाँ मरैत छी''
माय मृत्युमे
अपन मुक्ति
ताकि रहल अछि
ओकरा लगैत छैक
वैतरणीक बीच
फँसि गेल अछि जीवन
जकरा पार-घाट
एकमात्र मृत्युए लगा सकैत अछि
एहि विरह-व्यथासँ
ओ थाकि गेल अछि
माया-मोहक हाथे
ओ हारि गेल अछि

एहेन बात नहि अछि
कि माय-पिताक बीच
रहल सभ दिन
सम्बन्ध प्रेमे-पूर्ण
किछु दिन त'
एहनो आयल
कि माय पिताक
आ पिता मायक
छाहोसँ मुँह फेरबाक लेल
आतुर देखेलाह

लागल आब सभ किछु
समाप्त होइबला अछि शीघ्रहि
धरि सम्बन्धक
अंतिम तार
लाख आन्ही अयलाक बादो
नहि टूटल अंत-अंत धरि

किछु त' छल
माय-पिताक बीच
एहेन बात
जे बिनु कहने
सुनैत छल
बिनु बजने
बुझैत छल
से जँ नहि रहितय
त' सत्तरि वर्षक संग
कोना बिता लेलक ओहिना
बिना कोनो अनुबंधक

मोने अछि ओ बात
जखन माय
गंभीर रूपें बीमार
भेल रहय
आ नहि करैत रहै असरि
डाक्टरक कोनो दवाइ
पिता बिषहरी स्थानसँ
अनने रहथि फूल-विभूत
आ मायकेँ हँसोथि
फेकि देने रहथिन
बाड़ीक ओहि पार

आ लेने रहथि
जोरसँ साँस
जेना मायक
सभ रोग-व्याधि
भ' गेल हो दूर

जखन खसल रहथि पिता
जिनगीक रेसमे चित्ते
त' पिताक संग-संग
माइयो भ' गेल रहै बेजान
कएक दिन
कएक राति धरि
नहि एलै
ओकरा आँखिमे निन्न
आ आँखि बरसैत रहलै
भदबरिया मेघ सन
जकरा ओ पोछैत रहल
अपनहि आँचरसँ

क्रुर काल
कहाँ बुझैत अछि
ककरो भावना
नहि छैक ओकरा हृदयमे
संवेदनाक लेल
एक्को रत्ती जगह
से जँ रहितै
त' मायकेँ
जखन पिताक
सभसँ बेसी बेगरता छलै
जीवनक चारिम

अवस्था छलैक
त' एना नहि ल' जइतै पिताकेँ
मायसँ दूर
ओहि दुनियाँमे
जकर नाम आ पहिचान
नहि छैक बुझल
एखनो लोककेँ

आइ पिता नहि छथि
लाख हाक दियौ
पिता नहि घुरैत छथि
साँझ पड़लाक बादो घर
पहिने कतहु
बाझल रहैत छलाह
त' मुन्हारियो साँझ धरि
घुरैत छलाह
अवश्य घर
आब साँझ हो कि राति
पिता लेल धनि सन

पिताक राजपाटक
एकमात्र महारानी माय
राजपाट रहितो
एकटा पिता बिनु
अपनाकेँ बुझैत अछि
श्रीहीन, सत्ताहीन

सभ दिन तकैत छथि
सभक मुँह
ककरा की कहबै

आ कि नहि कहबै
ककरा कोन बात
नीक लगतै आ
ककरा कोन बात बेजाय
एकटा अन्तर्द्वंदमे फँसल
जीबि रहल अछि
अपन जीवन
जेना-तेना।

•

भाव हिंसा

एकटा पुरुष
हमर पिता छलाह
एकटा पुरुष
हमर भाइयो
एकटा पुरुष
हमर पति भेलाह
एकटा पुरुष
हमर पुत्र
एकटा पुरुष
हमर सर-कुटुम्ब छलाह
एकटा पुरुष
हमर मित्र सेहो

एकटा पुरुषक
आँखिमे देखलहुँ
अपना लेल प्रेम
एकटा पुरुषक
आँखिमे देखलहुँ
अपना लेल घृणा
एकटा पुरुष
हमरा पैर तर
अपन तरहत्थी बैसा देलक
एकटा पुरुष
छिड़ियबैत रहल
हमरा बाटे-घाटे काँट
एकटा पुरुष
बड़क छाहरि बनि

हमरा बचबैत रहल
शीत आ रौदसँ
हमरा मान-सम्मानकेँ
अपन धोतीक कोरमे
गिरह बान्हि
लगेने रहल
अपन हृदयसँ
आ एकटा पुरुष
ग्रसित रहल
सभ दिन
हमरा प्रति
भाव-हिंसासँ
एक्कहि जनममे
करैत रहल
कएक बेर हमर खून
कएक बेर पिचैत रहल
अपना पैर तर
हमर मान-सम्मानकेँ

एकटा पुरुष लेल
हमरो हृदयमे
प्रेम अछि
एकटा पुरुष लेल
हमरो हृदयमे घृणा
एकटा पुरुषक
मान-सम्मान लेल
हम जान लगा देल
एकटा पुरुषक
मान-सम्मान
हमरा लेल अदना। •

उपकार

एकटा स्त्रीक हाथ
कतेक टन
चिक्कस सानैत अछि
एकटा स्त्रीक हाथ
कतेक लाख
रोटी बेलैत अछि
एकटा स्त्री
कतेक भूखल-पियासलकेँ
परितृप्त करैत अछि
एकटा स्त्री
कतेक झाड़-झाँखरकेँ
साफ करैत
घर लगबैत अछि

धरि ओ तैयो नहि
कहियो ककरोसँ
कहैत अछि
ई बात
कि हम करैत छी
अहाँ पर उपकार

मुदा जखन कखनो लड़खड़ाइत छैक
स्त्रीक पैर
बेसम्हार छोइत छैक
ओकर तन-मन
आगू बढ़िक'

थाम्हैबला ओकर हाथ
बड़ सहजतासँ
कहैत छैक ई बात
''अहाँ मोन राखब
हम छी तेँ अहाँ''

ओहि एक पलमे
गड़ि जाइत अछि स्त्री
उपकारक तरमे
जतयसँ बाहर निकलब
कठिन रहल छैक
स्त्रीक लेल
आइ धरि।

•

मेला

मेला परिसरमे
सुन्दर-सुन्दर
लाहक चूड़ी लेने
बैसल छल
ओ दुनू छौड़ी
जाहिमे एकक उमेर
दससँ बारहक बीच होइतै
आ दोसरक उमेर
तेरहसँ पन्द्रहक बीच

एक जोड़ी
सुन्दर लहठी पर
अटकि गेल
हमर नजरि
पुछलियै दाम
कतेककेँ छौ ई चूड़ी
हलसति कहलक ओ
''मैडम मात्र ढाई सौ का
आप ले लो न
पूरे हाथ की बनायी है यह चूड़ी
और आपके साईज की भी है''

वास्तवमे
चूड़ी बड़ सुन्दर छलै
प्योर लाहक
ओहि पर मीना बैसायल
दूर धरि चमकैत

पुछलियै, कतयसँ आएल छें
कहलक– ''मैडम हम राजस्थान से आये हैं।''
बगलेमे
माइयो बैसल छलै

मोन चूड़ी देखि
जतबे खुश भेल
ओतबे दुखी
ओहि दुनू छौड़ीकेँ देखि
आखिर कोनो ने कोनो विवशता
त' हेतै जरूर
ओकरा मायक समक्ष
जे एहि प्रदूषित माहौलमे
जतय बेटी
घरसँ बाहर धरि
लूटल जाइत अछि
माल-असवाब जकाँ
ओतय अपन बेटीक संग
राजस्थानसँ
बिहार धरि आयल अछि
अपना हाथक बनायल चूड़ी
बेचबाक लेल
मेले-मेले घुमबाक लेल
स्कूल-कॉलेजक बात त' दूर
सुरक्षा पर ठाढ़ छैक जतय
बहुत पैघ प्रश्न-चिन्ह
जकर उत्तर
हमरा लग त' नहि अछि
अहाँ सभ लग हुअए
त' कहब! •

जेबी महक रूमाल

पुरुषक कल्पनामे अछि
एखनो सुन्दर सुकोमल स्त्री
ओकर इच्छानुरूप अनुगामिनी

पुरुष चाहैत अछि
स्त्री रहै ओकरा जीवनमे
जेबी महक रूमाल बनि
जकरा जखन
जेहन बेगरता पड़ै
''यूज एण्ड थ्रो''
कयल जा सकै
या पाँच तहकेँ मोड़ि
जेबियेमे राखल जा सकै
जकर भूलोसँ नहि हो
अंगवस्त्र सन
अपन अस्तित्व

पुरुष स्त्रीकेँ चाहैत अछि अवश्य
मुदा अपना साँचामे
गढ़ल-गाँथल
ओ नहि चाहैत अछि
हो स्त्रीकेँ
अपन आकार-प्रकार
स्वतंत्र स्त्रीक अस्तिव
पुरुषकेँ चुभैत छै
अमतीक काँट सन

पुरुष नहि चाहैत अछि
स्त्री आगि हो
पुरुष चाहैत अछि
स्त्री त'व हो त'व
जाहि पर रोटी
सेकल जा सकै
जाहि रोटीसँ
भूख मेटायल जा सकै

आगि रूपमे
स्त्रीक धाह
पुरुषक सम्पूर्ण अहंकार पर
पड़ैत अछि भारी
जकरा नहि ओ
बारि पबैत अछि
नहि सम्हारि पबैत अछि!

•

एक कप चाह

राति करीब-करीब
आधा बीतल होयत
गहन चिंता आ दुःखसँ
थाकल मोन
कने शांत भेले रहय
कही जे अर्धनिद्रावस्थामे रही
तखने देखलहुँ सपनामे
अहाँ अगबे दूधक
चाह लेने ठाढ़ छी
बड़ आग्रह आ सिनेहसँ
कप बढ़ा रहल छी
हमरा दिस

ओहि आग्रहकेँ
हम आदेश मानि
ल' लैत छी
अहाँक हाथसँ
ओ भरल कप चाह
आ पीबय लगैत छी
सुआदि-सुआदि
वास्तवमे चाह
बड़ सुअदगर अछि

ओहि चाहमे
आद देल अछि
आ कि इलायची

वा किछु अछि
ओहिमे विशेष सम्मिश्रित
किछु स्पष्ट
पता नहि
चलैत अछि हमरा
हमरा त' एतबे पता चलैत अछि
अहाँक हाथक
ओ एक कप चाह
हमर चेतना
घुरा रहल अछि
आ उबरि रहल छी हम
एहि दुःख
एहि वेदनासँ
नहुँए-नहुँए

एहि तरहें
कतेको कप
चाहक आग्रह
होइत अछि
अहाँ दिससँ
आ आँखि खुजबाक पूर्व धरि
हम पीबैत चलि जाइत छी
अनेक कप चाह
अहाँक प्रेम
अहाँक भावना
अहाँक समर्पणकेँ
सम्मान करैत

अहाँ के छी
हमरा नहि पता

नैहर-सासुर
गाम-घर
हाट-बजार
कतय देखने छी
किछु नहि मोन अछि हमरा
एहि आत्मीयतापूर्ण
सम्बन्धक शुरूआत
के केलक
कोना भेल
सेहो नहि
पता अछि हमरा
हमरा त' एतबे पता अछि
अहाँक हाथक
ओ एक कप चाह
हमरा लेल
संजीवनीक काज कयलक
सुखायल-टटायल जीवनमे
श्रावणी हरियरी अनलक

की कही आ कोना कही हम
आँखि जखन फूजल
आ नहि देखलहुँ अहाँकेँ
अपना अगल-बगलमे कतहु
पुनः मोन
घोर वेदनासँ
घेरा गेल
ओह! अहाँ कत' गेलहुँ?
कियै गेलहु?
एहि तरहें
हमरा असगर छोड़ि

तखनहि घड़ी-घंट बाजल
मंदिरमे
आ पहिल मोन
दोसर मोनसँ कहलक
अहाँ सपना छलहुँ
यथार्थ नहि
फेर दोसर मोन
पहिल मोनसँ कहलक
जँ अहाँ सपना छलहुँ
त' यथार्थ
कियैक नहि भेलहुँ!

•

विषकन्या

हम इतिहास प्रसिद्ध विषकन्या
जकर अस्तित्वक भयावहता
लोकक मुँह पर
वर्तमानो धरि
ओहिना अक्षुण्ण
जकर नामहिसँ आतंकित
सकल समाज
जकर स्पर्शहुँ वर्जित
जग आ जीवन लेल
से हम सभ दिन
तकैत रहलहुँ
अपन अस्तित्वक सार्थकता
अपन भविष्यक सुरक्षा
अपन वर्तमानक महत्व

सत कही त'
हमरा नहि भेटल कतहु
अपन सार्थक अस्तित्व
भविष्य त' भविष्य
वर्तमानो धरि कहाँ छल
हमर सुरक्षित
हम समाजमे रहितहुँ
जीबैत रहलहुँ
एकाकी जीवन
आ एकांत पाबि
बहैत रहल आँखिसँ

दहो-बहो नोर
जकरा अपनहि आँचरसँ
चोरा-नुका पोछैत रहलहुँ
हमर हँसी जे महत्वपूर्ण छल
नोर नहि

हम चलैत-फिरैत
अस्त्र-शस्त्र छलहुँ
जकर निर्माणे कयल जाइत छल
निजी हित साघना लेल
लोक मरैत अछि
जीवनमे एक बेर
हमर जीवने
मृत्युक अभरण छल
जाहिमे
नखसँ शिख धरि
हम सजल रही
बिन इच्छे
ओहिमे फँसल रही

प्रकृति हमरो त' बनेने रहै
एकटा सामान्ये स्त्री
जकरा प्रेम करैक अधिकार छल
जकरा परिवार बसबैक अधिकार छल
सृष्टिक निर्माणमे
जकर योगदान
आवश्यक छल
तकरा बाबू-भैया सभ मिलिक'
बना देलनि
निजी स्थार्थ लेल विषकन्या

विषकन्या बनब
हमर इच्छा नहि
विवशता छल
जकर भार
इतिहाससँ वर्तमान धरि
उठबैत-उठबैत हम
थाकि गेल छी
धरि तैयो चल' पड़ि रहल अछि
आइ धरि निरंतर
कहिया धरि आरो चल' पड़त
पता नहि
कारण हम एकटा स्त्री छी
दमित, परित्रासित छी
तेँ विषकन्या छी।

•

चारिटा रोटी

''अरे अहाँ करिते की छी
चारिटा रोटी बनेबाक सिवा
ओहो कोनो काज भेल''
अहाँक ई शब्द
तहियेसँ सुनि रहल छी
जहियासँ अहाँ
हमरा जीवनमे अयलहुँ
पति रूपमे परिचित भेलहुँ

पचास डिग्री टेम्परेचरमे
ठाढ़ भ' क'
भनसा घरक चुल्हि लग
जखन बनबैत रहैत छी
वैह चारिटा रोटी
आ चुबैत रहैत अछि
माथसँ घाम
जे पैर दने
बहि जाइत अछि सहजहि
तहन बेर-बेर कानमे
गुँजैत रहैत अछि
अहाँक ई शब्द
''चारिटा रोटी
बनेबाक सिवा
अहाँ करिते की छी?

तखन ताक' लगैत छी हम

ओहि चारिटा रोटीमे
अपन अस्तित्वक सार्थकता
तहन लगैत अछि
एहि चारिटा रोटीक
निर्माण आ विध्वंश
त' संगे-संग चलैत अछि
भोर बनत त'
दुपहरमे समाप्त
साँझ बनत त'
रातिमे समाप्त

बेर-बेर तकैत छी
अपना हाथ दिस
जे रोटी बेलैत
आ रोटी सेकैत
खिया गेल अछि
बहुत पहिनहिसँ
धरि तैयो
रोटी बेलबाक
आ रोटी सेकबाक क्रम
नहि भेल अछि समाप्त
एखन धरि
एहि जीवनमे

कएक दिन त'
सोचैत छी
आब बंद क' दी
ई रोटी बेलब
आ ई सेकब
एहि पचास डिग्री टेम्परेचरमे

सीझि-सीझिक’
जखन एकर महत्व
कियो दैते नहि अछि

फेर सोचैत छी
जाहि दिन
बंद क’ देत
ई हाथ
रोटी बेलब
आ रोटी सेकब
ओहि दिन
अन्न-पानि पर निर्भर
अहाँक जीवन कोना रहि पाओत सुरक्षित
एहि चारिटा रोटीकेँ नकारलाक बादो
एहि चारिटा रोटीक अभावमे!

•

अहाँकेँ हमर सप्पत छी

हे! हमरा छोड़ि दिअ
अपना हाल पर
ई पिपनी परहक नोर
ई ठोर परहक संवेदना
ई ऊपरे-ऊपरक अपनैती
एहि सभक मादे
हम नहि बुझैत छियै
से बात नहि छै

सभटा बुझैत छियै हम
साँझे राति जे
पैसल रहै
घरमे चोर
आ सभटा समेटि-बटोरिक'
ल' गेल रहै
से चोर कियो आन नहि
अहीं रही
सद्यः पकड़ने रही हम
अपने हाथे
अहाँक हाथ
आ एहि नाते
छोड़ि देने रही
जे अहाँ कहने रही
ई हमर अंतिम अपराध छी
स्त्री जाति
दया-दरेगसँ बाहर

कहाँ भ' पबैत अछि
सय बेर ठकेलाक बादो
मुदा लोककेँ
ओ चिन्हि जाइत अछि
एकहि नजरिमे
अहाँकेँ होइत होयत
''डुबिक' पानि पीबी त'
एकादशीक बापो नहि बुझय''
से बात नहि अछि
सभटा अछि
बूझल हमरा
हम कतेक दिन धरि
झँपने रहब
अहाँक सभटा खटरास
अपना ओहि आँचरक तरमे
जकरा उघार करैमे
एको कसरि
नहि छोड़लहुँ अहाँ!

•

छौड़ी

रास्ता पर चलैत छौड़ी
कतेक असगर होइत अछि
जखन नजरि फिरेलाक बाद
अपना चारूकात
ओकरा देखाइत छै
मात्र पुरुषे-पुरुष

तखनहि रास्ता पर चलैत
छौड़ीक मोनमे
पैसि जाइत छै डर
एकटा अनहोनीक आशंका
की पता कखन
ककर मोन
बदलि जाय
''जेना कि होइते रहलै आइ धरि''
आ क' दै ओ
छौड़ीक मान-सम्मानकेँ
तहस-नहस
जे कि छौड़ीक वर्तमान
आ भविष्य पर
ठाढ़ क' सकैत अछि
बहुत पैघ प्रश्न-चिन्ह

छौड़ी समधानिक' उठबैत अछि
एक-एक डेग
चौकन्ना भ' तकैत अछि चारूभर

पढ़ैक प्रयास करैत अछि
हवामे पसरल दुर्गन्धिकेँ
आ बढ़ैत जाइत अछि आगू
जतयक लेल
ओ यात्रा तय केने अछि

ओ छौड़ी सोचि लेने अछि
ओ नहि घूरत पाछू आब
चाहे परिणाम जे हो
ओ संघर्ष करत
अपना लेल
अपन अबैबला
पीढ़ीक लेल
आखिर ओहो त'
एकटा विशाल
प्रजातांत्रिक गणराज्यक हिस्सा अछि
जकरा एतेक अधिकार त' छैहे
कि ओ अपन जीवन
अपना हिसाबेँ
जीबि सकै।

•

आत्मोत्सर्ग

सीता!
परिवारसँ
समाजसँ
लोकमे व्याप्त
रीति-कुरीतिसँ
आजिज आबि
ओहि धरतीक ओद्र
वरण केलीह
जाहिसँ भेल छल
हुनक जन्म

सीता चाहितथि त'
अपन सम्पूर्ण जीवन
अपना बल पर
जीबि सकैत छलीह
एतेक सामर्थ्य
छलनि हुनकामे

जाहि समयमे
स्त्री अबला रूपें
जानल जाइत छलीह
समाजमे
परिवारमे
सीता अपना बाहुबलें
अपन जीवन जीलीह
सबला बनि

अनेको बिपति
बाधाकेँ हरबैत
एकटा कुशल गृहिणी
एकटा सब तरहेँ सक्षम माय
स्वाभिमानी स्त्रीक रूपमे

से सीता
जे ककरो लग नहि हारलीह
ककरोसँ नहि परास्त भेलीह
ओ अपन जीवन
एहि तरहेँ
आत्मोत्सर्ग करतीह
लोकप्रिय राजा
रामोकेँ
कहाँ भेल हेतनि
सपनोमे भान

जाहि रामराज्यक
गुणगान करैत
लोक थकैत नहि अछि
ओहि राम
आ ओहि रामक राजमहलकेँ
एकटा वनवासिनी
एसगर स्त्री ठुकराबैत
पुनः ओहि लोकमे
ओ घुरि गेलीह
जतयसँ ओ आयल रहथि

एहिसँ
एकटा बात त’

स्पष्ट भइये जाइत अछि
जे ककरोसँ
नहि हारैत अछि
ओ अपन लोकसँ
हारि जाइत अछि
जे ककरो लग
नहि झुकैत अछि
ओकरा अपन लोक
तोड़ि दैत छै।

•

दशरथ माँझी

''बुझलहुँ अहाँ भरि दिन
दशरथ माँझी जकाँ
पहाड़ तोड़ैत रहैत छी''
अहाँक ई शब्द
बेर-बेर
नहि जानि
कतेको बेर
गुँजैत रहैत अछि कानमे
तहियेसँ
जहियासँ हम
अहाँ घर अयलहुँ
पति रूपमे
अहाँसँ परिचित भेलहुँ

हम सामान्य गृहिणी
अहाँक एहि शब्दवेधी वाणसँ
घायल होइत
छटपटाइत-कछमछाइत
ताकय लगैत छी
अहाँक घरमे
अपन अस्तित्वक सार्थकता
नोनमे, तेलमे
हींगमे, हरदिमे
तीमन-तरकारीमे
चाउर-चिक्कससँ ल' क'
भोरसँ साँझ धरिक

चुल्हि-चिनबारक व्यवस्थामे
दिन बनल त' रातिक चिन्तामे
राति बनल त' दिनक चिन्तामे
घुलैत-मिलैत रहैत छी
सभ ठाम
अपनाकेँ
तकैत रहैत छी

सरिपहुँ दशरथ माँझी
नहि बनि पौलहुँ
कहियो अपना लेल
सभ दिन तकैत रहलहुँ
अहींक मुँह
कोन बात नीक लागत
कोन बात बेजाय
हमर कोन काजसँ
अहाँ प्रसन्न होयब
हमर कोन काजसँ
अहाँ दुःखी
की चढ़त चुल्हि पर
जकर सुगंधिसँ
सुवासित होयत
अहाँक साँस

हम सभ दिन
सभ चुल्हि पर
चढ़बैत रहलहुँ
अलग-अलग बरतन
आ पकबैत रहलहुँ
अलग-अलग पकवान

ई जनितहु
जे हम कतबो जतन करब
नहि निकलत अहाँक मुँहसँ
प्रसंशाक दूटा शब्द
हमर भावना आ संवेदनाक संरक्षण
ने काल्हि कयलहुँ अहाँ
ने करब आइ

हम मनैत छी
नहि बनि पौलहुँ
दशरथ माँझी कहियो
नहि तोड़ि सकलहुँ
कहियो पहाड़
हम एही सभमे ओझरायल रहलहुँ
अहाँक घरमे
अहाँक धिया-पुताक
माय बनि

कहू! से जँ तोड़ने रहितहुँ
दशरथ माँझी जकाँ पहाड़
त' आइ हमरो लेल होइतै
अपन रास्ता
जतय अहाँक
ई शब्दवेधी वाण
नहि करैत रहितै
नित-दिन
हमर प्रतीक्षा
''अहाँ करितै की छी
दशरथ माँझी जकाँ
कोनो पहाड़ कटै छी? •

चिरयौवना

सुन्दर सुकुमारी
छत्तीसो गुणक आगर
आज्ञाकारिणी
हर समय, हर परिस्थितिमे
चिरयौवना स्त्रीक विषयमे
बहुत पढ़ल इतिहासमे
बहुत सुनल लोकक मुँहें
जे स्वर्गक शोभा बढ़बैत छलीह
स्वर्गाधिपति इन्द्रक संगहि
धरतीसँ स्वर्ग धरिक
अनेको श्रेष्ठ पुरुषक
सेवा करैत छलीह
जिनकर स्वयं केर
कोनो परिवार नहि होइत छल
इच्छा-आकांक्षा
ने पूछल जाइत छल
आ ने अर्थ रखैत छल

विधाता जकर निर्माण
दोसरेक सुख-सुविधा लेल
कयने होइथि
ओकर की इच्छा
की आकांक्षा
की अपन, की आन
यज्ञाहुति लेल
समिधा सन जीवन
जरनाइये एकमात्र
जीवनक लक्ष्य

चिरयौवना स्त्रीक विषयमे
जे पढ़ल छल
जे सुनल छल
लगभग-लगभग एतबे सन
चिरयुवा पुरुषक विषयमे
कोनो जानकारी
हमरा लग नहि अछि
जिनक निर्माण
विधाता कयने होइथि
स्वर्गसँ संसार धरिक
श्रेष्ठ स्त्रीक सेवा-सुश्रुषा लेल
जे नतमस्तक होइथि
स्त्रीक इच्छा-आकांक्षा लग
जिनक जीवनक लक्ष्य हो
स्त्रीकेँ प्रसन्न करब
स्त्रीक आज्ञा शिरोधार्य करब

जँ अहाँ लग हुअए
एहेन तरहक चिरयुवा
पुरुषक मादे
कोनो जानकारी
त' कहब
हम सुन' चाहैत छी
बुझ' चाहैत छी
स्त्री आ पुरुषक बीच
समता आ विषमताक मादे
ई आइये भ' रहल अछि
आ कि इतिहासे भरल अछि
शोषित-परित्रासित
स्त्रीक व्यथा-कथासँ! •

गैर जमानती वारंट

बियाहक वेदी तर
मंत्र पढ़बैत
कहने रहथि पंडितजी
हमर हृदय
स्पर्श करबाक लेल
आ अहाँ कयने सेहो रही
हमर हृदय स्पर्श

धरि ओ हृदय स्पर्श हमर
मात्र दैहिक छल
आत्मिक हृदय स्पर्श
एखनो अछि
बाँकी प्रिये
बियाहक एहि चौबिसम सालमे
प्रवेश कयलाक उपरान्तो

हम अहाँ
एहि संयुक्त जीवनमे
ओहेन संयुक्त
नहि भ' सकलहुँ
जकरा एक प्राण, दू देह
कहल जाइत अछि

लौकिक जीवनमे
उलहन-उपरागक
बेन-तिहार त'
चलिते रहल सभ दिन

दुनू तरफसँ
आ अपना-अपनाकेँ
श्रेष्ठ साबित करक प्रतियोगितो
ई उचितो अछि
जे जखन
अपन-अपन लक्ष्य हो
त' अपन-अपन नावक
अपन-अपन पतवार
अपने थामी
धरि तैयो कहब जे
हमरा-अहाँक बीच
एहि चौबिस सालमे
किछु नहि रहल
त' ओ झूठ होयत
किछु त' अछि
हमरा अहाँक बीच
जे जोड़ने अछि
एक-दोसराकेँ
एक-दोसरासँ
आ डूमय नहि दैत अछि
आन्ही-बिहाड़ि
पानि-पाथरमे
नावकेँ बीच मझधार
जेना-तेना
लगाइये लैत अछि घाट
उतारिये लैत अछि पार

हमरा मोनमे
ई भाव
कहियो नहि आयल

जे अहाँ हमरासँ
दूर भ' जाइ
कि हम अहाँसँ
दूर भ' जाइ
दूर हेबाक
कल्पनेसँ
मन विह्वल भ' उठैत अछि
एनामे दूरक बात त'
दूरोसँ सोचल
नहि जा सकैत अछि

हमरा त' होइत अछि
अहाँ रही
हमरा जीवनमे एहिना
हमर धिया-पुताक
चिंता करैत
हमरा घरक व्यवस्थाक
भार उठबैत
आ हम सूती निश्चिंत
ई सोचि
की अहाँ छी ने
हमर चिंता करक लेल

हमरा अहाँक प्रेमक
कोनो इतिहास
नहि बनत
लैला-मँजनू
सिरी-फरहाद
मुमताज-शाहजहाँ जकाँ
ई हम जनैत छी

धरि हमर-अहाँक प्रेम
सदैव वर्तमान रहत
गैर जमानती वारंट लेने
भारतीय गृहस्थ जीवनमे
सेहो हम जनैत छी
आ एहि प्रेमक बिना
सृष्टिक निर्माण
परिवारक कल्पना
नहि भ' सकैत अछि
सेहो तय अछि।

•

आर्यपुत्र

जन्मदिनक मंगलकामना आर्यपुत्र
हम एकटा सामान्य गृहिणी
एहिसँ बेसी की द' सकैत छी
एहिसँ बेसी हमरासँ
की उम्मीद लगा सकैत छी

जखन कि अहूँ जनैत छी
आ हमरा त' पता अछिये
चाउर-दालि-आटासँ ल' क'
नून-तेल, हींग-हरदि
तीमन-तरकारी धरिक
व्यवस्था करैत-करैत
सभ बेर हाथ भ' जाइत अछि
एहि जेठक आतपकालमे
सुखायल पोखरिक पानि जकाँ
बुंद-बुंद खाली

तैयो घरक व्यवस्था
सुचारू रूपसँ
बनल रहय
आ अहाँक माथ पर
चिंताक रेखा
नहि उभरय
तेँ अहाँक घर घुरैसँ पहिने
उतारि फेकैत छी
उदासीक चेफड़ी लागल वस्त्र

आ प्रसन्नताक कांजीवरम्
साड़ी पहिरि
हँसय लगैत छी
कठहँसिए हँसी
अहाँक आगवानी करैत
चाय-नाश्ता दैत
माथ सोहराबैत

आर्यपुत्र तैयो
अहाँक आभिजात्य रक्त
ई बात मानै लेल
तैयार कहाँ होइत अछि
कि हम किछु करैत छी
हरदम यैह उलहन-उपराग
अहाँ बैसल-बैसल
करिते की छी
मात्र पलंग तोड़ैत छी

अर्थशास्त्रमे जाहिसँ
धन नहि प्राप्त हो
ओकरा काज नहि मानल जाइत अछि
से बात हमहुँ जनैत छी
धरि एकटा बात त'
इहो हम जनैत छी
शायद अहूँ
जनिते होयब
जे अहाँक घरकेँ
हम घर बनाक'
रखने छी।

•

पुरुषक झुंड

पुरुषक झुंडमे
परिस्थितिवश
जखन होइत अछि
कोनो स्त्री एसगर
चाहे ओ कतबो
साहसी कियैक ने हो
कियैक ने हो ओकरामे
समूहक सामना
करक क्षमता
धरि तैयो ओ
कतहु ने कतहु
घबराइत अछि
ककरो ने ककरोसँ
आ कोनो बिंदु पर
डराइत अछि
ककरो ने ककरो
आँखिमे
ओकरा देखाइ पड़ैत छै
वासनाक आगि
कतहु ने कतहुसँ
ओकरा साँसमे
अबैत छै
वातावरणक अवशिष्ट रूपमे
स्त्री देहक
लालसाक दुर्गन्ध

पुरुष! पहिने

पुरुष होइत अछि
तखन कवि-कथाकार
साधु-संन्यासी
कलाकार, समाजसेवी
नेता-उपनेता
तहिना स्त्री
पहिने स्त्री होइत अछि
तखन जीवनसँ जुड़ल
अन्य क्षेत्रमे
सिद्धहस्त कलाकार
आ स्त्री देहक
जे पुरुषक मोनमे
लालसा अछि
ओ आइसँ नहि
आदिपुरुष
मनुसँ ल' क'
चलि आबि रहल अछि
आधुनिक मानव धरि
जकरा ने
स्त्री बदलि सकल
आ ने पुरुष!

•

छी घरक मलिकानि, मँगै छी दूगो खुद्दी

अलखक चान रहथिन भौजी
अपन नहिराक
मुँहसँ किछु
खसल नहि कि
अपना-अपनीकेँ
पूरा करक लेल
सभ हाजिर
दाइ की खेतीह जे मोटेतीह
दाइ की पहिरतीह जे सुन्दर लगतीह
नेनामे खुएलहा
मैंयाँ हाथक
कौआ क'र
मेना क'र
सुग्गा क'र
एखनो मोन छनि ओहिना

से अलखक चान
जखन सासुर एलीह
त' साउस त' तरे रहै
घरेबला भ' गेलखिन
सात घरक दुश्मनोसँ
पैघ दुश्मन
एम.ए.-बी.ए. पास
भौजीक गिनती
होमय लागल
मुर्खोसँ पैघ मूर्खमे

उलहन-उपराग, लांछन
दिन-प्रतिदिनक
नियति भ' गेलनि

घरक विपन्नावस्था त'
खूब देखाओल गेलनि भौजीकेँ
धरि भैयाक आमदनीसँ
नहि रह' देल गेलनि
कोनो सरोकार
सात तालामे बंद
रहय लगलीह
भैयाक बेजान लक्ष्मी
आ चलैत-फिरैत
लक्ष्मीक हाथ
राखल गेल खाली
ई सोचि-समझि
जे खगता रहतै
तखने ने झुकल रहत
भरल पेट
ककरा के पूछैत अछि

भौजी नहि बुझैत छथि
से एहेन बात नहि छै
सभटा बुझैत छथि
प्रतिकारोक साहस
छनि भीतरमे
मुदा निर्णयक
अंतिम निर्णयसँ पहिने
सोझाँमे आबि
ठाढ़ भ' जाइत छनि

अपन दुनू नेना
जकरा एहि घून संग सातु जकाँ
पिसेबाक लेल
हुनक मातृ हृदय
कतहुसँ गवाही
नहि दैत छनि
तेँ ओ जीबि रहल छथि
अपन जीवन
एहि फकराकेँ
चरितार्थ करैत
''छी घरक मलिकानि
मँगै छी दूगो खुद्दी।''

•

धर्मक बेटा

अस्सी वर्षक
झंझर कायामे
एखनो बड़की काकीकेँ
बेटाक लेल जे स्थान छनि
बेटाक लेल जे माया छनि
से बेटीक लेल कहाँ

बेटा लाख दुर्वचन कहनि
लाख उपेक्षा-अपमान करनि
तैयो कहथिन
अहाँ की करबै
ओकर त' स्वभावेमे तामस छै
जन्मेसँ
आखिर बेटा छी
धर्मक बेटा
मुँहमे आगि
त' वैह ने देत
क्रिया-कर्म वैह ने करत
वैह ने उतारत
वैतरणी पार

बेटी बेचारी
दिन भरि
मायक हाल-चाल पुछैत छथि
बेटाक दुर्वचनक प्रहारसँ
क्षत-विक्षत मायक हृदयकेँ

स्नेह-प्रेमसँ सींचैत छथि
अपना परिसके
ओ सभ काज करैत छथि
जाहिसँ बड़की काकीक
मन आ तन
स्वस्थ सानन्द रहि सकनि
तैयो मायक हृदयमे
ओ स्थान नहि बना पबैत छथि
जे भाइक लेल सुरक्षित अछि
एखन धरि जन्मेसँ।

•

यात्रा

सभ फूलक भागमे
कहाँ होइत छै
देव-पितर पर चढ़ब
ककरो सिंगार बनब
ककरो गरदनिक हार बनब
किछु फूल त'
मौलाक'
झड़ैयेक लेल
फुलाइत अछि

जकरा देखबै भोरमे
डारि पर डग-डग करैत
पात संग हँसैत-गबैत
हवा आ सूर्यक किरण संग
रंग-रभस करैत
से साँझ होइत-होइत
निष्पंद भेल धरती पर
खसल भेटत

मोन हुअए त'
उठाक' माथ पर चढ़ा ली
आकि लतखुर्दनि करैत
बढ़ि जाउ आगू
कोनो प्रतिक्रिया
नहि देखायत कतहुसँ

धरि तैयो

निर्धारित समय पर
फूल फुलाइते अछि
डारि-पात संग
अन्तरंग सम्बन्ध
रखिते अछि
गबिते अछि
हवा आ सूर्यक किरण संग
राग मल्हार

एहि बातकेँ कात क'
जे भविष्यक गर्तमे
ओकरा लेल
की छुपल छै
काल्हि ओकरा संग
की हेतै
ओ निर्वाध-निर्द्वन्द
यात्रा करैत अछि
आ करिते जाइत अछि
अन्त-अन्त धरि।

•

ई हम कोना मानि ली

ई हम कोना मानि ली
जे युग-युगसँ
जकरा लतखुर्दनि करैत
आनन्दित होइत रहल
अहाँक मोन
ओकरा अपना समकक्ष
ठाढ़ करबामे
कोनो कसरि
नहि छोड़ब अहाँ

ई हम कोना मानि ली
जे नहुँए-नहुँए सम्वेदना
पनपय लागल अछि
अहाँक हृदयमे
हमरा लेल
जखन कि हम जनैत छी
हमर दुःख-सुखसँ
कोनो सरोकार
कहियो नहि रहल अहाँकेँ

ई हम कोना मानि ली
कि जे दर्द
अहाँ देलहुँ अछि
ओहि दर्दक दवाइयो
अहीं आनब
अहीं पोछब
ओहि आँखिक नोर

जाहिमे नोरोक कारण
अहीं बनलहुँ सदैव

ई हम कोना मानि ली
कि हमरा जीवनमे
जे कोनो नीक होयत
ओ अहींसँ होयत
जखन कि हम जनैत छी
एकटा विषदन्त
पलैत अछि
अहाँक भीतर
हमरा लेल

ई हम कोना मानि ली
जे अहाँक पुरुष प्रधान इच्छा
हमर स्त्री प्रधान बेगरताक समक्ष
अपनाकेँ समकक्ष भ' ठाढ़ करत
अपन कार्य-व्यवहारक बीच
पुनर्मूल्यांकनक लेल सदैव
जगह सुरक्षित राखत
जखन कि हम जनैत छी
एकटा तानाशाह
एखनो अछि जीबैत
अहाँक भीतर
स्त्री देहक
अनेक लोलुपता
एखनो अछि बाँचल
अहाँक मोनमे।

•

सामान्य स्त्री

किछु स्त्री
लाल-पीयर साड़ी पहिरने
जाहिमे काढ़ल अछि
सुन्दर कशीदा
जकर बीच-बीचमे
जड़ल सिताराक चमक
आँखिकेँ चौंधियाबैत अछि
दूर रहितहु
गबैत जा रहल अछि गीत
''अपना बेटवाकेँ करेलू बियाह
हो बलम दुबरा गेलू''

ओकर मुँह त'
दूरसँ
देखा नहि रहल अछि
धरि ओकर उत्साह
ओकरा शब्दसँ
स्पष्ट सुना रहल अछि
चाहे अपन बेटाक बियाह हो
वा पड़ोसीक बेटाक
ओ धरि खुश अछि

ओकरा कोरोनाक
कोनो आपातकालसँ
किछु लेना-देना नहि छै
ओ सामान्य स्त्री अछि

जकर जन्म
सामान्य स्थितिमे
होइत अछि
आ मरियो जाइत अछि
सामान्ये स्थितिमे

ओ नहि कनैत अछि
दुनियाँक अधिकांश
लोकक मृत्यु पर
घरक कोनो कोनमे
कूही भ'
ओ नहि हँसैत अछि
दुनियाँक अंजान
अनचिन्हार लोकक
सुख पर
सामान्य स्त्रीक
सुख आ दुःख
दुनू सामान्ये होइत अछि।

•

स्मृति

बात अठारह साल पहिलुका अछि
यैह आसिनक इजोरिया राति रहै
आ हम-अहाँ रही
नव विवाहिता पति-पत्नी
की कही
कतेक अनुराग रहय
ताहि दिन
हमरा-अहाँक बीच
आँखिसँ ओझल नहि होइ
कि लागय दुनियाँ हेरा गेल

यैह कारण रहय
जे कोजगराक मार्केटिंग कर'
गेल रही हम
अहाँक संगे
बाबूजीक सख्त आदेश रहनि
''सभ किछु
चौधरी जीक पसंदक
हेबाक चाही''
एकटा जमाय जे रहियनि हुनक
अलखक चान

सैह भेबो कयल
सभ किछु अहींक पसंदक
किनने रही हम
दरभंगाक टावर चौक पर

मुदा हाय रे कपार
गाम घुरैत काल
टूटि गेल रहै
कमला बलानक बान्ह
आ पानिसँ दहो-बहो
भ' गेल रहै
सम्पूर्ण परोपट्टा

गाम पहुँची त' पहुँची कोना
कथबारेक बीच सड़क पर
उतारि देने रहै बस
आ असमंजसमे पड़ि गेल रही
हम-अहाँ

काल्हि कोजगरा
आ आइ बाटे-घाटे बैसल छी
मुदा दया आबि गेल रहै
एकटा रिक्साबलाकेँ
आ बिदा भ' गेल रहै
हमरा-अहाँकेँ बैसा
गाम धरि पहुँचेबाक लेल
जे कमलेसरी करथिन

की कही
कतेक नीक लागल रहै
ओहि धवल इजोरियामे
रिक्सा पर बैसल
अहाँक संगे हमरा
कनियें रिक्सा डोलल कि
गसिकेँ पकड़ि लेने रही हम

अहाँक बाँहि
आ कहने रही
''हम जीबय चाहैत छी एखन
जीबामे हमरा नीक लगैत अछि''
की कही
कतेक नीक लागल रहय हमरा
अहाँक ओ स्नेहपूर्ण स्पर्श

ताहि दिनसँ आइ धरि
जखन-कखनो मोन उबल जीवनसँ
अहाँ बेर-बेर
मोन पाड़ैत रहलहुँ ओ बात
आ सम्हारि लेलहुँ
जीवनसँ
पलायन करबासँ।

•

हमर जन्मदिन

ककरो ने मोन पड़लै
कि आइ हमर
जन्मदिन छल
भोरसँ साँझ भ' गेल
प्रतीक्षा प्रतीक्षे रहल
ने कियो शुभकामना देलक
आ ने आशीर्वाद

काश कि कियो
छातीसँ लगबितय
ने मधुर त' चॉकलेटे सही
मुँह मीठ त' करबितय
देखितियै ककरो मुँह पर
हर्षक रेखा
लगितय जे सफल भेल
आइ हमर जन्मदिन

मुदा नहि
नहि पड़लै
ककरो मोन
हमर जन्मदिन
आ कि जानि-बुझिक'
बिसर' चाहैत अछि लोक
हमर जन्मदिन

हमरा भेला, नहि भेलासँ
की अन्तर पड़तै ककरो

आइ हम छी
जँ काल्हि नहि रहब
त’ की हेतै
जहिना सभ जाइत अछि
तहिना हमहुँ चलि जायब
आइ वर्तमान छी
काल्हि अतीत भ’ जायब

ककरो गेलासँ
कहाँ होइत छै
कोनो जगह खाली
एकटा जाइत अछि
दोसर अबैत अछि
जगह भरलकेँ
भरले रहि जाइत अछि

आइ की
जहिया हम जनमल होयब
तहिया की भेल हेतै
ककरो कोनो खुशी
बेटी परसँ बेटी सुनि
पिताक माथ
झुकि गेल हेतनि
अपने आप
भारी मनसँ
माय उठौने हेतीह कोरामे
आ लगेने हेतीह छातीसँ
सोहर-खेलौना गबै लेल
उताहुल मैंयाँ
देने हेतीह

माथ पर हाथ
पीटने हेतीह छाती
''हे! भगवान
फल्लाँमाक दिन
केहेन केलियै
बेटी परसँ
फेर बेटीये देलियै''
जनम समय टिपबा लेल
कॉपी-कलम ल'
तैयार बाबा
बेटीक नाम सुनिते
चोट्टहि अँगनासँ
घुरि आयल हेताह दलान

आइ-माइ
व्यक्त कयने हेतीह दुःख
मैंयाँ आ माय लग
पितासँ बात करक साहस
त' नहिये भेल हेतनि ककरो

बेटा रहितौं
त' उत्तराधिकारी
बनबितथि पिता
पकड़ितथि हमर हाथ
अपन कर्ता रूपमे
बेटी केहनो गुण-शील युक्त हो
नहि बनैत अछि
पिताक उत्तराधिकारी
नहि बनैत छै समाजमे
ओकर अपन पहिचान

पराया-पराया कहैत लोक
क' दैत छै ओकरा पराया
छोड़ि अबैत छै
सखी-सहेली
गीत-नाद गबैत
कनैत-खीजैत
गामक सीमान धरि

हमर जन्मदिन
एहिना अबैत रहत
एहिना जाइत रहत
शुभकामना-आशीर्वाद लेल
आइयो तरसैत रहलहुँ
शुभकामना-आशीर्वाद लेल
काल्हियो तरसैत रहब।

•

निर्माण आ विध्वंश

कोनो स्त्रीकेँ
उघार करैसँ पहिने
ई बात सोचय पड़त श्रीमान्
की ओ स्त्री
मात्र स्त्री नहि
एकटा माइयो होइत अछि
जे रखैत अछि
अपन सन्तानकेँ
दस महिना पेटमे
आ अपन रक्त-मज्जासँ
करैत अछि
ओकर संवर्धन-संरक्षण

कोनो स्त्रीकेँ
उघार करैसँ पहिने
ई बात सोचय पड़त श्रीमान्
की अहाँ अपनहि अस्तित्वकेँ
लगबैत छी दाव पर
अपनहि पैर पर
मारैत छी
कुड़हड़ि-टेंगारी
करैत छी
अपन जड़ि उकन्नन
चौसर पर बैसबैत छी
अपन मान-सम्मान
समाप्त क' रहल छी

भूमिक सभ उर्वरता
जाहि पर फरय-फुलाइए
अहाँक दुनियाँ

कोनो स्त्रीकेँ
उघार करैसँ पहिने
ई बात सोचय पड़त श्रीमान्
जे स्त्रीक नोर आ धैर्य
जाहि दिन बेसम्हार होयत
किछु नहि बाँचत
तहस-नहस भ' जायत
अहाँक सम्पूर्ण परिवेश
ओहि दिन जँ अहाँ
चाहबो करब त'
नहि बचा पायब
अपन अस्तित्व

जँ स्त्री निर्माण क' सकैत अछि
त' विध्वंसो करक
क्षमता आ साहस
बाँचल छै स्त्रीमे।

•

एकटा आम स्त्रीक सुसाइड नोट

हुजूर! हम मर' नहि चाहैत छलहुँ
हमरा मरबाक लेल
विवश कयल गेल
अहीं कहू
ई हरल-भरल फुलबाड़ी
जकरा हम
अपन खून-पसेनासँ पटेलहुँ
दिन-राति एक क' क'
सजेलहुँ-सँवारलहुँ
तकरा छोड़िक'
मरक मोन
ककरा करतै

हुजूर! बड़ निर्ममतासँ
बेदखल कयल गेल
हमरा अपन बाड़ी-फुलबाड़ीसँ
फूल त' फूले छल
सुगंधो पर प्रतिबंध
लगा देल गेल
हमरा लेल
अहीं कहू
एहन विषाक्त वातावरणमे
साँस लेबाक जोग वायु
जीबाक इच्छा
कोना आ कतयसँ
अनितियै सरकार

हुजूर! खोंइछामे दूभि-धान द'
मंगल गीत गाबि
विदा केलकै हमरा
हमर सखा-सम्बन्धी
एकटा सुखद भविष्यक आसमे
की यैह जगतक रीत छियै
हुजूर घोघ तनने
जखन पैसलियै
कोबर घर
मोन ताकय लगलै
माइक ममता
पिताक स्नेह
भाइ-बहिनीक अपनत्व
हुजूर! कतहु किछु नहि
देखेलै हमरा
सकाले करोट घुमिक'
सूति रहलखिन अपने
कहलखिन बड़ थाकल छी
एहेनमे जीवनसँ वैराग्य
अपने-आप भ' जाइत छै सरकार

हुजूर! हमरा एहेन
निफिकिर जीबै वाली
छौड़ीक माथ पर
पटकि देल गेलै
परिवारक पैघ जिम्मेदारीक भार
सभक इच्छा-आकांक्षाक
लेखा-जोखा
एको रत्ती देह
सोझ नहि करू

की त्राहिमाम्-त्राहिमाम्
एहेनमे जीवन बोझ
सहजहि बुझाइत छै सरकार

हुजूर! सत कहैत छी
हम मर' नहि चाहैत छलहुँ
हमरा मरबाक लेल
विवश कयल गेल
हमर भावना-संवेदनाकेँ
आमक गारा बना
पीबि गेल सभ
बेराबेरी भरि-भरि गिलास
हमर सुख-दुःख
फेकाइत रहल
एहि हाथसँ ओहि हाथ
हमर मान-सम्मान
थकुचाइत रहल
रस्ता परहक लजौनी जकाँ
पैरे-पैर
एहेनमे जीबाक इच्छा
नहि रहैत छै शेष सरकार

हुजूर! एहेन बात नहि छै
की हम फाटलकेँ
सिलियै नहि
रूसलकेँ
बौंसलियै नहि
सभ केलियै सरकार
जते धरि परिसक छल
मुदा तैयो फाटल

फटले रहलै
रूसल नहि बौंसेलै

हुजूर! तैयो जीबैत गेलियै
जीबैत गेलियै
ई जानि जे
जीवन छी त'
जीबाक अछि
जँ ई युद्धे छी त'
लड़बाक अछि
मुदा हारि गेलियै तखन
जखन रक्षके
बनि गेलै भक्षक
आ मारि देलकै
छातीमे अगिनवाण
एहेनमे जीवनक स्रोत
सुखा गेलै
अपने-आप सरकार

हुजूर! हम मर' नहि चाहैत छलहुँ
हमरा मरबाक लेल
विवश कयल गेल
नाक दाबिक'
जबर्दस्ती
जहर पियाओल गेल।

•

प्रेमविहीन जीवन

प्रिये! जखन कखनो
जाइ छी बाजार
रंग-बिरहा साड़ी देखि
बरबस सोचय लगैत अछि मोन
जँ अहाँ आइ रहितहुँ
हमरा जीवनमे
त' कोन रंगक साड़ी
लितहुँ हमरा लेल
लाल, पीयर, हरियर
बैगनी वा गुलाबी

मोने अछि ओ बात
जे अहाँ हमरा कहने रही
कि एहि बेरुका मैरेज-डे पर
हम आनब अहाँ लेल
अपना पसंदक साड़ी
मुदा भाग्य हमर
मैरेज-डेसँ पहिने
मैरेज खतम भ' गेल
टूटि गेल
प्रेमक अनुबंध
स्थिति त'
एतय धरि पहुँचल अछि
कि हम-अहाँ
एक-दोसराक परछाहियोसँ
मुँह फेरैत छी सदिखन

जे भेल से नीके भेल
से हम नहि कहब
धरि सभटा बेजाइये भेल
सेहो कहब सत नहि होयत
जहन एक-दोसराक
सम्मान नहि क' सकलहुँ
एक-दोसराक मनोभाव
नहि बुझि सकलहुँ
एक-दोसराक अवनतियेमे
अपन उन्नति बुझलहुँ
तहन एहि संगसँ नीक
अलग भ' बनाउ
अपन-अपन बाट
अपन-अपन घाट

धरि एतेक अछि
पूर्ण सत्य
जे जीबाक लेल
प्रेम अछि
बहुत जरूरी ओहिना
जहिना साँस लेबाक लेल हवा
पियास मेटेबाक लेल पानि
आ भूख मेटेबाक लेल अन्न
प्रिये प्रेम बिनु जीवन
फुलबाड़ी नहि
श्मशान होइत अछि
जतयसँ रुदने आ क्रंदने
सुनाइत अछि चहुँओर।

•

पुरुष

किछु पुरुष होइत अछि
सोलहनी पुरुष
काछुक खपलोइया सन कठोर
जे सभ जगह
सभ परिस्थितिमे
पसारने रहैत अछि
अपन कठोरता
लाख अन्हर-बिहाड़ि आबौ
लाख सर्दी-गर्मी आबौ
डिगत नहि ओ
पिघलत नहि ओ
ठाढ़ कयने रहत अपनाकेँ
मीलक पाथर बना
हर हालमे

किछु पुरुष होइत अछि
एकदम पुरुष
निरमाक सफेदी लेने
चकचक करैत
जे कोनो सार्वजनिक मंचसँ
स्त्रीक अस्तित्व
भूलोसँ नहि स्वीकारत
ओकरा हर घड़ी
ई डर बनल रहैत छै
ओकर सफेदी पर
कतहुसँ कोनो दाग

नहि लागि जाइ
कियैक त' ओ मानैत अछि
स्त्रीक अस्तित्वकेँ स्वीकारलासँ
दाग लगैक खतरा
बनल रहैत छै सदैव
भलेहि एकांतमे
ओ बास करै
स्त्रीयेक संग
वा स्त्रीक बिना
नहि चलै ओकर जीवन
ई अलग बात छै
ओकरा लेल

किछु पुरुष होइत अछि
मात्र पुरुष
मनुक्ख नहि
जकर शब्दकोशमे
संवेदना सन शब्द
कोनो स्थान नहि रखैत अछि
महत्व त' दूरक बात
पृथ्वी जँ पलटि जाथि
त' 'आह' तक
नहि करत ओ
सामान्य मनुक्खक त' बाते कोन
ओ हर हालमे
बरकरार राखय चाहैत अछि
अपन पुरुषत्वकेँ
कियैक त' ओ मानैत अछि
संवेदना मनुखकेँ
कमजोर बनबैत अछि

ताहुमे पुरुष
पुरुषकेँ संवेदना
शोभा नहि दैत छै

किछु पुरुष
ने पुरुष होइत अछि
आ ने स्त्री
ओ मनुक्ख होइत अछि
सरल-सहृदय
मानवीय संवेदनासँ
भरल-पूरल
जे सामनेबलाक सम्मान
ओतबे करैत अछि
जतेक कि अपन
जकरा लेल
दोसरक सुख-दुःख
ओतबे अर्थ रखैत अछि
जतेक कि अपन
जे दुःख अयला पर
कनबो करैत अछि
आ सुख अयला पर
हँसबो करैत अछि
जे पुरुष बनल रहबाक लेल
अलगसँ
कोनो कीर्त्तन नहि करैत अछि
कोनो मठ नहि बनबैत अछि
ककरोसँ कोनो
विशेष पूजा नहि करबैत अछि।

•

प्रेमक भाव

शरदकालीन दिनक
ई दुपहरिया छी
सूर्यदेव सोलहो त' नहि
दस-बारह कलाक संग
अवश्य देदीप्यमान छथि

पुरबा-पछबा बसात
रहि-रहि हिलकोर मारैत अछि
नदी-पोखरिक पानि सन
दिन-दुनियाँ चलि रहल अछि
अपना-अपना गतिये

बगलबला डबरामे
बगुलाक झुंड
रहि-रहि लोल डुमबैत अछि
केचली आच्छादित पानिमे
आ जखन उठबैत अछि
गरदनि ऊपर
देखैत छी
इचना-पोठी
भरल रहैत अछि
ओकरा मुँहमे

एहि सभसँ फराक
एक जोड़ी मैना-मैनी
बैसल अछि

हमर खिड़कीक छज्जा पर
एक-दोसराक
पाँखि सोहराबैत
चोंचसँ चोंच मिलबैत
प्रतिष्ठित करैत
एक-दोसराक आँखिमे स्वयंकेँ

बड़ सहजता
बड़ सिनेहसँ
चीं-चीं क' रहल अछि ओ
की बजैत अछि
की सुनैत अछि
हमरा नहि पता

हँ! तहन एतेक धरि
बुझैत छी जरूर
ओ किछु ने किछु
प्रेमेक बात
क' रहल अछि
एक-दोसरासँ
प्रेमक अभिव्यक्ति
भलेहि हमरा धरि
नहि पहुँचि रहल हो
प्रेमक भाव
अवश्य देखा रहल अछि
ओकर सभक आँखिमे।

•

सिनेहक छाहरि

मोन पड़ैत अछि ओ दिन
जहिया विवाह क' क'
ल' गेल रही हमरा
अहाँ मुम्बइ

बड़ तामस उठल रहय हमरा
सभ बरतन-बासन पर
अपन नाम गोदल देखि
कहलहुँ– ''ई की केलहुँ अहाँ
शाहजहाँ अपना घरबाली लेल
ताजमहल बनेलक
आ अहाँ हमरा लेल
ई बरतन-बासन ओरियेलहुँ
ओहि पर नाम गोदेलहुँ''

हँसिते कहने रही अहाँ
''सामान्य लोक
अपन प्रेमकेँ
बाहर नहि
अपन घरमे
जगह दैत अछि''
धरि जे से
मुदा नीक नहि लागल रहय हमरा
कहू, हमर एहेन दुर्दिन
जे चाउर-आँटाक डिब्बा पर
नाम गोदायल जाइ हमर

ई हम नहि कहब
कि हमरा-अहाँक बीच
महुएक मिठास पसरल रहल सभदिन
कखनो तीत त' कखनो मीठ
रहल हमर-अहाँक संबंध
धरि जे हो
हम त' यैह कामना करैत छी
हम रही नहि रही
अहाँ रहब जरूर
अपन स्नेहक छाहरिमे
समेटने हमरा
आ हमर लगाओल
बाड़ी-फुलबाड़ीकेँ ।

•

दाइ

दाइ! अपना लेल जँ अपनहि
अहाँ मुँह नहि खोलबै
त' कहू कोना बुझत लोक
अहाँक मोनक बात
दाइ! अपना लेल जँ अपनहि
हाथ नहि उठेबै
त' कहू के बनत
अहाँक सहारा
दाइ! अपना लेल जँ अपनहि
अहाँ डेग नहि उठेबै
त' कोना बाहर निकलब
एहि बियाबान जंगलसँ

मनलहुँ हम
आगुक बाट
अछि बहुत दुरुह
जकरा पार करब
आसान नहि
ककरो लेल
धरि तैयो
करहि पड़त साहस
डेग उठेबाक
आगू बढ़बाक

दाइ! हाथ पर हाथ ध'
युग-युगसँ

एना बैसल अहाँ
कोना रहि सकैत छी
अहाँकेँ बनबय पड़त
अपना लेल
अपनहि बाट
काँकड़-पाथर
काँट-कूस
सभकेँ साफ करैत

दाइ! अपन सम्मान
जँ अहाँ अपनहि
नहि करब
त' के करत आन
अपन भावनाक मान
जँ अपनहि
नहि राखब
त' के राखत आन

मानलहुँ दया, करुणा
प्रेमसँ सिक्त
अहाँक हृदय
अपना लेल
कोनो कठोर निर्णय
लेबासँ घबराइत अछि
मोह-मायामे लेभराइत अछि
धरि जँ अहीं नहि बाँचब
त' कोना बाँचत प्रेम
दया, करुणाक लेल
कोन जगह रहत सुरक्षित

उठू!
जागू!!
सम्हारू अपना आपकेँ
आ बढ़ाउ डेग आगू
जतय आधा नहि
सम्पूर्ण आकाश
करैत अछि
अहाँक प्रतीक्षा।

•

लेखा-जोखा

स्त्रीक लेल
पुरुषक हृदयमे
जे दया-करुणा आ प्रेम अछि
तकर जखन
लेखा-जोखा
करक लेल बैसैत छी
त' लगैत अछि
ओकर हिंसक प्रवृति लग
ओकर दया-करुणा
तुलनामे
कम पड़ि रहल अछि
कम पड़ि रहल अछि
समताक ओ भावो
जे स्त्रीक अधिकार क्षेत्रमे
अबैत अछि

स्त्री उपेक्षित भ'
भूमिजा होथु
आ पुनः
भूमियेमे समा जाथु
ई न्याय नहि
अन्याय छी

अन्यायी अछि
ओ हाथ सेहो
जे स्त्रीकेँ

विरासत बुझि
सौंपैत अछि
एहि हाथसँ
ओहि हाथ

स्त्रीक जीवन
ओकर मान-सम्मान
कोनो राजतंत्रक
माथक ताज नहि
जे उत्तराधिकारी
केहनो अयोग्य हो
केहनो क्रूर हो
केहनो कठोर हो
ओकरा माथ पर
सुशोभित क' देल जाय
उत्तराधिकारमे।

•

खंडित मूर्ति

ई पहिल बेर नहि भेल अछि
जे हमर मोन
अहाँसँ
वैराग्य लेलक अछि
एहेन-एहेन वैराग्य त' जीवनमे
कतेक बेर आयल
कतेक बेर गेल

अहाँ गायक गोबर
आ बालु गीरी
अपन कुव्यवहारक
पश्चाताप लेल
प्रायशिचत करैत रहलहुँ
आ परास्त करैत रहलहुँ हमरा
विश्वासक प्रहारसँ
ई बुझितहुँ हम
जे अहाँ नहि बदलब
अहाँक बुनियादी
निर्माणेमे अछि दोष
हम माफ करैत गेलहुँ

सुनैत छी
जँ स्नेह-भावसँ
सींचल जाय
त' पाथरो पर जनमैत अछि दूभि
धरि ईहो कहबी

नहि भेल चरितार्थ
नहि कयलक हमर स्नेह-सत्कार
कोनो काज
हम निर्जला व्रत क'
अहाँक जड़िकेँ सींचैत रहलहुँ
अहाँ पर जल-फूल चढ़बैत रहलहुँ
आ अहाँ छल-प्रपंचक
चौसर पसारि
हमरा ठकैत गेलहुँ
ठकैत गेलहुँ

ई जनितो
जे अहाँक विश्वासक
सभटा आडम्बर
झूठे अछि
हम विश्वास करैत गेलहुँ
अहाँक चक्रव्यूहमे
हम अपनहि
फँसैत गेलहुँ
ई जनितहुँ
की ठेस लगबाक संभावना
अछि प्रबल

प्रिये! सय नहि
एक सय एक गलती अहाँक
माफ करक धैर्य
रखलहुँ हम अपनामे
धरि अहाँ थकैत नहि छी
झूठ-फरेबसँ
हम सत्यकेँ

सम्हारैत-सम्हारैत
थाकि गेल छी

प्रिये! मन-मंदिरमे
जतेक खंडित मूर्ति अछि
ओहिमे एकटा
अहूँक अछि
सोचै छी
गंगाक धारामे
विसर्जित क' आबी
आ कहि दी
आइसँ अदना भेलहुँ
अहाँ हमरा लेल
अदना भेलहुँ हम
अहाँ लेल
खंडित मूर्तिक पूजा
नहि काल्हि करैत छल लोक
खंडित मूर्तिक पूजा
नहि आइ करैत अछि लोक।

•

शांति कुटीर

चलैत-चलैत अचानकसँ
नजरि टिकि जाइत अछि
शांति कुटीर पर

ई शांति कुटीर
सभ दिन
मौन देखाइत अछि हमरा
कएक बेर रूकिक'
कान लगाक'
सुनक प्रयास करैत छी
धरि उड़ैतो-उड़ैत
एकोटा शब्द
एको मिसिया हलचलाहटि
कतहुसँ हमरा
नहि सुनाइत अछि
नहि देखाइत अछि

बेर-बेर मोन
सोचै पर विवश करैत अछि
आखिर एहूमे रहैबाली स्त्री
(ज्ञातव्य हो जे ई एकटा आश्रय स्थल छी
उपेक्षित परित्रासित स्त्रीक लेल)
त' साँस लैत अछि
ओकरो त' मानवीय
इच्छा-आवश्यकता हेतै
से एहि तरहेँ

निस्पंद भेल
कोना जीबि रहल अछि
बुझू जे मरले अछि
एक तरहें

जकरा परिवार
नकारि दै
जे समाजसँ
परित्रासित होइ
जे स्त्री हेबाक
दण्ड भोगय
ओकरा कोनो
शांति भेटबाक उम्मीद
कोना क' सकैत छी हम
तन पर लागल दाग
मेटा जाइत हो भलेहि
आत्मा पर लागल दाग
कहाँ मेटाइत अछि किन्नहुँ!

•

अमावस्यामे दीप सन

आइ अहाँ हमरासँ
आ हम अहाँसँ
कतेक दूर छी
एकर त' अंदाजो आब
नहि लागि रहल अछि हमरा

धरि गाहे-बगाहे
मोन पड़ैत रहैत अछि
अहाँक ओ बात
''क्रीम कलरक साड़ी
कियैक पहिरैत छी?
मैरून कलरक
कियैक नहि पहिरैत छी
गोर देह पर
नीक लागत अहाँकेँ''
''हे यै, ई नम्हर बिंदी
कियै लगबैत छी?
छोट बिंदी लगाउ ने
नीक लागब अहाँ
एकदम कम उमेरक
सुन्दर सुकुमारि''

मोन अछि अहाँकेँ
इजोरिया रातिमे
घुमैत-फिरैत गेल रही
रमेशराक पानक दोकान पर

आ एक खिल्ली पीरा पातबला
पान ठुसैत हमरा मुँहमे
अहाँ कहने रही
''खाक' त' देखियौ
बड़ नीक लागत अहाँकेँ''

अहाँ त' नहि छी आब
धरि ओहि पानक सुआद
एखनो अछि जीह पर हमर
अहाँ कहने रही
''प्रेम समर्पण मँगैत अछि
आ हम समर्पित छी
सभ तरहें अहाँक लेल''

हमहुँ निछच्छ बताहि
आँखि मुनिक'
मानि लेने रही
अहाँक सभटा बात
ताहि दिनमे
कहाँ भेल
एको रत्ती भान
जे अहाँ प्रेम नहि
प्रेमक तमाशा क' रहल छी
हमरा संगे

आ जाहि दिन समाप्त भ' जायत
अहाँक ई तमाशा
अहाँ छोड़ि-छाड़ि
ई राग-अनुराग
भागि जायब

ततेक ने दूर
जतयसँ घुरबाक
आसो नहि रहि जायत
जीवनमे कहियो

एकटा बात धरि जानि लिअ
अहाँ भलेहि हमरासँ
दूर भ' गेल होइ
अहाँक हृदयमे धरि
जरैत रहत
अमावस्यामे दीप सन
हमर प्रेम
अपन अर्थ आ महत्व बनौने।

•

परित्रासित स्त्री

भोरक करीब सात बाजल रहै
आ हम टहलि-बुलिक'
घुरिते रही घर
तखनहि देखलहुँ
सीढ़ी पर बैसल
कनैत दीपाकेँ

ई दीपा कियो आन नहि
हमरे पड़ोसीक
नव विवाहिता पत्नी छलीह
जकर हाथक मेहदी
आ कोबराक रंग
मलिनो नहि भेल छल
एखन धरि
तकरा एहि तरहें
सीढ़ी पर कनैत देखि
आश्चर्य लागल हमरा
संगहि चिंता सेहो भेल

हम पुचकारैत
ओकर आँखिक नोर पोछैत
पुछलहुँ– ''बाबू की भेल
कनैत कियैक छी भोरे-भोर''
ओ आरो धाह छोड़िक'
कानय लागल
आ कनिते-कनिते

जे किछु कहलक
ओ आरो आश्चर्यजनक
आ दुःखद छल

सभ राति पीक'
अबैत छै ओकर घरबला
आ पीट' लगैत छै
गाय-गौर जकाँ ओकरा

ओ शंका करै छै
ओकरा पर
जे ओ अन्य पुरुषसँ
मैसेन्जर पर बतियाइत अछि
ओ मँगैत छै
दहेजक सात लाख
बकियौता रुपैया

ओ छीनि लेलकै
ओकरासँ ओकर मोबाइल
आ मारि-पीटिक'
भगा देलकै ओकरा
अपन घरसँ
ओ कत' जायत
की करत
असमंजसमे अछि

ई बात सुनैमे
भलेहि सामान्य हो
धरि सामान्य नहि अछि
एकटा स्त्रीक लेल

जे एक्कैसम शताब्दीक प्रांगणमे
पलल-बढ़ल अछि
ओ आइयो पुरुषक हाथे
परित्रासित हो
आ प्रतिकारमे मुँहसँ
एकटा शब्द तक नहि निकालय
आ बहबैत रहय आँखिसँ
दहो-बहो नोर!

•